नवम्बर 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

महाविदेह क्षेत्र में
सीमंधर स्वामी भगवान विराजमान हैं।
उनकी मूर्ति यहाँ पर स्थापित करनी है।
यदि जीवंत भगवान की मूर्ति होगी
तो वह कितना फल देगी !
सीमंधर स्वामी का मंदिर तो अमूर्त का मंदिर है।

वर्ष : 15 अंक : 1
अखंड क्रमांक : 169
नवम्बर 2019
पृष्ठ - 40

Editor : Dimple Mehta
© 2019
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड

वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

मूर्ति के दर्शन से अमूर्त की पहचान

संपादकीय

भगवान ऋषभदेव के बाद से पूरे अवसर्पिणीकाल में अभी तक लोग मतार्थ से ही चले हैं। जब तक भगवान महावीर का शासन है तभी तक धर्म है। फिर तो धर्म का अंश भी नहीं रहेगा। मंदिर, किताबें वगैरह कुछ भी नहीं रहेगा। इसलिए अठारह हज़ार वर्षों में यदि सावधान हो जाएँ और मतार्थ में से छूट जाएँ तो भगवान ऋषभदेव के शासन जैसा निष्पक्षपाती रूख फिर से आ जाएगा, तब लोगों का कल्याण हो जाएगा।

इस मतार्थ को टालने के लिए परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री)ने जगत् कल्याण के महान यज्ञ में एक क्रांतिकारी कदम रखा। धर्म में मतभेद मिटाने के लिए हिन्दुस्तान में मुख्य तीन धर्मों के मंत्रों का एकत्रीकरण करके, साथ ही भव्य त्रिमंदिर की स्थापना भी की और मतभेद वाली दृष्टि को निर्मूल कर दी। जिसमें एक तरफ श्री कृष्ण भगवान और दूसरी तरफ शिव भगवान और बीच में वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी हैं। इस त्रिमंदिर में हर एक संप्रदाय के लोग किसी भी जाति-पाँति के भेदभाव के बगैर आ सकते हैं। मंदिर में आने वाले हर एक दर्शनार्थी को ऐसा ही लगना चाहिए कि ये मेरे ही भगवान है। लोगों को निष्पक्षपाती बनाकर, आत्मा के तरफ मोड़ने के लिए ही त्रिमंदिर की रचना हुई, यह सीमंधर स्वामी का संकेत है।

मंदिरों का विज्ञान समझाते हुए दादाश्री बताते हैं कि यह मूर्ति किसलिए रखी गई है? इसमें तो भगवान से प्रार्थना की गई है कि, 'साहब आप तो सनातन सुख वाले हैं और मैं तो टेम्परेरी सुख वाला हूँ। सनातन सुख पाने की मेरी भी इच्छा है।' वास्तव में भगवान तो खुद के भीतर बैठे हैं, उनका ही पता लगाना है लेकिन उसका भान नहीं हैं न, इसीलिए तो ज्ञानियों ने बाहर मूर्ति रखी ताकि मूर्तिवंत भगवान के दर्शन कर सकें, रियल का भान नहीं है। अत: पहले रिलेटिव में भान होता है और वहाँ से फिर रियल में आते हैं।

अब, ज्ञान लेने के बाद महात्माओं को पाँच आज्ञा का पालन करने के साथ-साथ प्रत्यक्ष प्रकट तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी के प्रति अनन्य भक्ति द्वारा, उनसे कनेक्शन करके, महाविदेह क्षेत्र में उनकी अनन्य शरण प्राप्त करने का अंतिम ध्येय रखना चाहिए। जब घर-घर में सीमंधर स्वामी के गुणगान गाए जाएँगे, हृदयपूर्वक भक्ति होगी, जगह-जगह पर सीमंधर स्वामी के मंदिर बनेंगे, उस समय हिन्दुस्तान का नक्शा कुछ और ही होगा!

दादाश्री बताते हैं, मुझे तो मोक्ष मिल गया है फिर भी मैं सीमंधर स्वामी के पास बैठा रहता हूँ। इसी से पता चलता है कि 'प्रत्यक्ष भगवान की भजना का महत्व कितना है!' पुण्य के योग से हमें ज्ञान सहित तीर्थंकर भगवान की भक्ति करने का अवसर प्राप्त हुआ है। ऐसे समय में प्रमाद न करते हुए उपयोग पूर्वक पुरुषार्थ करके, अगले जन्म में सीमंधर स्वामी के दर्शन के कारणों का अब यहीं पर सेवन करें, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

मूर्ति के दर्शन से अमूर्त की पहचान

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

हिन्दुस्तान का वैज्ञानिक साधन - 'मूर्ति'

प्रश्नकर्ता : दादा, मूर्ति पूजा के बारे में आपका क्या कहना है?

दादाश्री : मूर्ति पूजा तो हिन्दुस्तान का एक वैज्ञानिक साधन है। सारा संसार ही मूर्ति पूजा में है लेकिन वे यों चेहरे वाली मूर्तियाँ नहीं रखते। उसकी जगह चबूतरा बनाते हैं। ये मुसलमान लोग एक बड़ा आला बनाते हैं। आले के सामने पूजा (नमाज़ पढ़ते) करते हैं। यानी कि किसी न किसी चीज़ के सामने करते हैं। मूर्त चीज़ें, जो आँखों से दिखाई देती हैं, वे सभी मूर्तियाँ हैं। इन आँखों से जो दिखाई देती हैं, कानों से जो सुनाई देती हैं, वे सभी मूर्तियाँ कहलाती हैं। अपने यहाँ जो भी अच्छे पुरुष हुए, उनकी स्थापना की गई है। महावीर भगवान हो चुके हैं, कृष्ण भगवान हो चुके हैं, उनकी स्थापना की है।

मूर्ति तो मार्ग है। हिन्दुस्तान के लोगों को मूर्तियों की बहुत ज़रूरत है। इसका क्या कारण है? ये यहाँ से पूरा रोड क्रॉस करके उस रोड पर जाएँ, हाईवे पर और बीच में यदि कोई मंदिर-वंदिर कुछ भी नहीं आए तो लोग यहाँ से चलकर ठेठ अंत तक पहुँच जाएँगे पर उन्हें भगवान याद नहीं आएँगे। और यदि बीच में मंदिर या जिनालय कुछ, मूर्ति-वूर्ति आए तो नमस्कार करेंगे। जहाँ भी मंदिर आए तो भगवान याद आते हैं। अत: यह सारी व्यवस्था इन लोगों को याद दिलाने के लिए है। अत: यह अपना बहुत बड़ा विज्ञान है और यह परोक्ष भक्ति कहलाती है। आप जब मूर्ति के दर्शन करते हो न, तो वह अमूर्त को पहुँचता है। किसे पहुँचता है?

प्रश्नकर्ता : अमूर्त को पहुँचता है।

दादाश्री : हाँ, क्योंकि मूर्ति स्वीकार ही नहीं करती। मूर्ति तो खुद वीतराग है। उसे लेना भी नहीं और देना भी नहीं। वह तो जिसका हो, उसे वहाँ भेज देती है। अत: मूर्ति पूजा उसे हेल्प करती है।

अपने साइन्टिस्टों की खोज

प्रश्नकर्ता : यह जो मूर्ति को नहलाते-धुलाते हैं, क्या वह जड़ क्रिया नहीं है? उसका क्या अर्थ है?

दादाश्री : मूर्ति को नहलाते-धुलाते और फिर मूर्ति को कपड़े पहनाते हैं। अगर फॉरेन के साइन्टिस्ट यह सब देखेंगे न तब कहेंगे कि, 'ये लोग तो मेड, मेन्टल है!', इस मूर्ति को किसलिए नहलाते हैं? इसका अर्थ ही क्या है? मिनिंगलेस। और ऊपर से कपड़े पहनाते हैं। जबकि अपने यहाँ के साइन्टिस्टों ने क्या खोज की? कहीं और

जगह पर उसका चित्त ठिकाने पर नहीं रहेगा। चित्त गलत जगह पर जाएगा उसके बजाय सही जगह पर रखो। यह अपने साइन्टिस्टों की खोज है। यह फॉरेन के लोगों को समझ में नहीं आएगा। क्योंकि यदि उसे सही जगह नहीं दोगे तो वह किसी गलत जगह पर चला जाएगा। इसलिए मूर्ति को नहलाते, धुलाते हैं, उसे कपड़े पहनाते हैं, उसे ऐसा कराते हैं, वैसा कराते हैं।

अत: ये सारी क्रियाएँ वैज्ञानिक हैं! अपना यह तरीका वैज्ञानिक है, लेकिन अभी बिगड़ गया है, अभी तो वह सड़ गया है। मूल स्थिति में नहीं है। अत: उसका जैसा लाभ मिलना चाहिए वैसा नहीं मिलता। क्योंकि लोग उसके आग्रही हो गए। दुराग्रही हो गए, सिर्फ आग्रही नहीं। दुराग्रही, मताग्रही, कदाग्रही, हठाग्रही, ऐसा सब हो गया इसलिए पॉइज़न हो गया। अब, इसके बजाय छोड़ दें तो अच्छा है। किसी अच्छी चीज़ लिए यदि आग्रह किया जाए न, तो वह पॉइज़न बन जाएगी।

मूर्ति अपना एक बड़ा साइन्स है, यह हिन्दुस्तान का विज्ञान है।

यों टूटती है मोह की संकलना

प्रश्नकर्ता : दादा, इस मूर्ति विज्ञान का जो वैज्ञानिक कारण है, उस बारे में ज़रा विस्तार से समझाइए।

दादाश्री : मूर्ति का अवलंबन लेने से नरम हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : नरम हो जाते हैं?

दादाश्री : हाँ। मूर्ति अपना साइन्टिफिक रिज़ल्ट है। साइन्टिफिक रिज़ल्ट अर्थात् क्या कि मनुष्य के लिए यदि देरासर, मूर्तियाँ-वूतियाँ नहीं होतीं तो मनुष्य मोह में ही इतना रचापचा रहता कि उसे याद ही नहीं आता न! मंदिर देखते ही भगवान याद आ जाते हैं। अपने यहाँ तो थोड़ी-थोड़ी दूरी पर मंदिर आते हैं न, तो फिर भगवान याद आ जाते हैं। आपको समझ में आया न?

एक व्यक्ति ने मुझ से कहा कि हिन्दुस्तान में निरे जिनालय ही हैं। इस चाल में तो दो जिनालय हैं। इसकी क्या ज़रूरत है? पूरे शहर में एक जिनालय होना चाहिए। तब मैंने उसे समझाया, कि तू लोगों से तो पूछकर आ। लोग इतने मोही हैं, इतने मोही हैं, किस में मोह है उन्हें? कषायों में मोह हैं।

ये हिन्दुस्तान के लोग पुनर्जन्म को समझने लगे हैं इसलिए ये क्रोध-मान-माया-लोभ में ही रहते हैं। इनका मुकाम कहाँ है? क्रोध-मान-माया-लोभ में ही इनका मुकाम रहता है। जबकि फॉरेन वालों का क्रोध-मान-माया-लोभ में नहीं, उनकी रमणता विषयों में ही है! जबकि अपने यहाँ के लोगों को विषयों में मोह नहीं है। किसके मोह हैं?

प्रश्नकर्ता : कषायों के।

दादाश्री : मान-तान, मैं बड़ा और मैं ऐसा और मैं वैसा! इतने मोही हैं कि यहाँ से दो मील तक जाने पर भी उसे भगवान याद नहीं आएँगे। और जहाँ वह जिनालय देखेगा वहाँ नमस्कार करेगा, 'भगवान'! क्या आपको ऐसा लगता है कि ये लोग मंदिर देखते ही तुरंत जागृति में आ जाते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : नहीं आते?

प्रश्नकर्ता : देखते ही जागृति में नहीं आते।

दादाश्री : ये तो देखते ही जागृति में आ जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे तो इतने ही जागृत हैं कि ये भगवान के पास आए हैं तो हमारा दर्शन करने का, एक क्रिया का, कर्मकांड का ही भाव है।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। उसे भले ही जागृति न हो, लेकिन यदि मंदिर नहीं होंगे तो बिल्कुल ही याद नहीं करेगा भगवान को। मंदिर देखने पर उसे याद आता है कि, 'भगवान हैं।'

प्रश्नकर्ता : आंशिक रूप से उतना जागृत हो जाता है।

दादाश्री : यानी उतनी उसकी मोह की भूमिका टूट जाती है, अत: इससे पूरी संकलना ही टूट जाती है। मोह की जो पूरी संकलना है, उसके दो टूकड़े हो जाते हैं। इसलिए इसकी तो बहुत ज़रूरत है। नीचे की स्टेज वालों के लिए भगवान ने कहा था, कि 'जब तक अमूर्त के दर्शन नहीं हो जाते, तब तक मूर्ति को मत छोड़ना।'

अत: यह सब वैज्ञानिक तरीका है। (भगवान को) जो कपड़े वगैरह पहनाते हैं, वह भी वैज्ञानिक तरीका है। उसके लिए ऐसा नहीं कह सकते कि यह सब गलत है।

मूर्ति को जड़ नहीं मान सकते

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा गया है कि जो निर्जीव को जीव मानेंगे वे मिथ्यात्वी कहलाएँगे। यह मूर्ति तो निर्जीव है। अत: अगर उसे जीव मानेंगे तो क्या हम मिथ्यात्वी नहीं कहलाएँगे?

दादाश्री : यदि मूर्ति निर्जीव लगती हो तो आप नमस्कार करना बंद कर दो। मेरा कहना है कि यदि आपको मूर्ति निर्जीव लगती हो तो आप दर्शन करना बंद कर दो लेकिन ऐसा मत कहो कि मूर्ति जड़ है। वर्ना नर्क में जाओगे।

आपको यदि मूर्ति नहीं मानना है तो कोई हर्ज नहीं। मूर्ति आपसे ऐसा नहीं कहती कि आप मेरे दर्शन करने आओ। यदि आपको उस पर विश्वास नहीं हो, आपको श्रद्धा नहीं हो, तो आप उससे संबंधित कुछ मत बोलना।

किसी को जड़ नहीं कह सकते उसका बहुत भयंकर दोष लगता है। अनंत जन्मों की जड़ता नहीं जाएगी और पाँच सौ साल तक खिरनी के पेड़ में रहना पड़ेगा! इसलिए सावधान हो जाओ!

मूर्ति धर्म : अमूर्त धर्म

एक संप्रदाय के महाराज मिले थे। उनसे मैंने कहा, ''महाराज एक बात कहूँ? आपको अच्छा लगेगा? आपको अच्छा न लगे, ऐसी बात कहूँ? आप त्यागी बन गए हैं तो नापसंद बात सुनने की शक्ति उत्पन्न हो चुकी है आप में?'' तब महाराज ने कहा, ''कहो न बात? बात करने में क्या हर्ज है?'' इसलिए फिर मैंने महाराज से कहा, ''महाराज, कषाय जाने के बाद ही आप मूर्ति छोड़ सकते हैं। आप मूर्ति को जड़ कहते हैं, उस मूर्ति को जड़ नहीं कहना चाहिए। आप सब भी जड़ ही हैं न? चेतन को जाना नहीं, चेतन को पहचानते नहीं, फिर बचा क्या? चेतन आपने कहाँ देखा है? वह आप मुझे बताइए। जब तक अमूर्त को नहीं पहचाना, तब तक आप भी मूर्ति ही हैं न! यह नवकार मंत्र मूर्ति है। आप जो भी करते हैं, वह मूर्ति है, और आप भी मूर्ति हैं!''

मूर्ति तो परोक्ष प्रमाण है, परोक्ष भजना है। जब तक मूर्त में बसे हुए हो, तब तक मूर्ति को भजो। जब तक अमूर्त प्राप्त नहीं हुआ, तब तक मूर्ति को जड़ नहीं कह सकते। जो-जो आँखों से दिखें, वे सब मूर्तियाँ हैं। जगत् में जो सब मूर्त है, वही दिखाई देता है, अमूर्त कही दिखाई नहीं देता।

महाराज से कहा कि, ''आपको चेतन कहाँ दिखाई दे रहा है कि इसे जड़ कह रहे हैं? आपको बुरा लग रहा हो तो महाराज मेरी बात बंद कर दूँ।'' तब महाराज ने कहा, ''नहीं, बुरा नहीं लग रहा है। लेकिन हमने हमारा यह सिद्धांत ऐसा रखा है न!'' तब मैंने कहा, ''महाराज, आपका सिद्धांत आप रखिए, लेकिन लोगों को किसलिए ऐसा उपदेश देते हैं? आपका सिद्धांत है तो आप अपनी तरह से अपने पास रखिए, लेकिन लोगों को क्यों उपदेश देते हैं? लोगों को ज़रा रास्ते पर आने दीजिए। अनंत चौबीसियाँ चली गईं, फिर भी शुरू से ही मूर्तियाँ रखी हुई थीं। वर्ना बाल जीव कहाँ जाएँगे? मूर्तियाँ, वे बाल जीवों के लिए हैं। जिन्हें समझ नहीं है, ऐसे बाल जीवों के लिए हैं, वे ज्ञानजीवों के लिए नहीं हैं। मूर्ति से तो चित्त एकाग्र होता है। मूर्ति तो वीतराग भगवान की है और वे लोकमान्य हैं और साथ में उन पर शासन देवताओं का ज़बरदस्त बल है। वे शासनदेव रक्षण करते हैं। उनकी तरफ उँगली उठाने जैसा नहीं है। भीतर भगवान की स्थापना की हुई है।'' फिर कोई महावीर का सिर्फ नाम ही ले तब भी बहुत है, क्योंकि वीतराग भगवान का नाम है। किसी इंसान का नाम लेने के बजाय भगवान का नाम ले, अच्छा है न! नाम के साथ, भगवान कौन हैं, कैसे हैं, वह जानेगा। पहले काल की विचित्रता के कारण लोगों में गुरु का महात्म्य कम होता जा रहा था और मूर्ति पर बढ़ता जा रहा था, इसलिए आचार्य गुरु का महात्म्य बढ़ाने के लिए समझाने गए कि जिन लोगों की एकाग्रता मूर्ति में हो गई है, वे भले ही स्थापना में रहें लेकिन वे गुरु के पास रहें। लेकिन यह तो, मूर्ति पूजा पूरी तरह से गायब हो गई और मात्र गुरु पूजन का धार्मिक पंथ बन गया।

अरे! क्या ऐसा कहना चाहिए कि 'जड़ की शोभायात्रा निकाली?' जिस मूर्ति के प्रति लोगों को ज़बरदस्त पूज्य भाव है, क्या उसका तिरस्कार करना चाहिए? लेकिन गुरु के प्रति जागृति रहे, उसके लिए आपको मूर्ति हटा देनी पड़ी। लेकिन जिसे मूर्ति के प्रति भी एकाग्रता नहीं हुई, उसके लिए तो मूर्ति ही ठीक है। जिन्होंने अमूर्त को जाना नहीं है, अमूर्त को देखा नहीं है, अमूर्त सुना तक नहीं है, अमूर्त उसके भान में भी नहीं है, वे लोग कहाँ जाएँगे? वे बाल जीव कहाँ जाएँगे?

'महाराज, यदि आप इस मूर्ति को जड़ कहते हैं तो ऐसा कोई एक चेतन मुझे बताइए जो आपने देखा हो। आपने चेतन कहाँ देखा है कि मूर्ति को जड़ कहते हैं? आप खुद ही जड़ हैं न! आप खुद ही मिकेनिकल आत्मा हैं।' महाराज ने कहा, 'गुरु, तो चेतन कहलाते हैं न?' मैंने कहा, 'ना! इन पाँच इन्द्रियों से जो-जो दिखाई देता है, सुनाई देता है, वह सब अचेतन ही है। आप यह जो नवकार मंत्र बोलते हैं, वह भी मूर्ति ही है न? इन वीतराग भगवान की मूर्ति के प्रति तो लोगों के कैसे ग़ज़ब के भाव रहते हैं! इसलिए उन्हें द्वेष से मत देखना।' महाराज ने कहा, 'लेकिन हमारा सिद्धांत मूर्ति को नहीं मानता।' मैंने कहा, 'महाराज ज़रा सोचिएगा। मेरी

बात गलत है तो मैं इस बात को स्वीकार कर लेता हूँ। आपको दु:ख होता हो तो प्रतिक्रमण करते हैं आपका। लेकिन कुछ सोचिएगा। इन बालजीवों को तो अच्छी तरह चलने दो। आपको जैसा अनुकूल आए वैसा कीजिए।' महाराज कहने लगे : ''आपकी बात मुझे स्वीकार नहीं होती।'' मैंने कहा : ''महाराज, मेरी बात आपको किस तरह से स्वीकार होगी? आपको ऐसा लग रहा है कि मेरी बात गलत होगी, वह बात मैं भी कबूल करता हूँ। क्योंकि जो व्यक्ति जो चीज़ कर रहा होता है, उसे वह सही ही लगती है। कसाई होता है न, उसे भी ऐसा नहीं लगता कि वह जो करता है, उसमें पाप है। क्योंकि जो भी कार्य करते हैं उसका आवरण आ जाता है, उसमें सत्-असत् का विवेक चला जाता है। फिर क्या हो सकता है? जहाँ सत्-असत् का विवेक चला जाए, वहाँ पर फिर चाहे कुछ भी करने से, लाख जन्मों तक भी कभी सत्य समझ में नहीं आ सकता।''

इन लोगों ने मूर्ति को क्यों हटा दिया? मूर्ति को भजने से प्रमाद आ जाता है। मूर्ति डाँटती नहीं है न! मूर्ति ऐसा तो नहीं कहती न, कि आपने सामायिक क्यों नहीं की? और गुरु हों, तो डाँटते तो हैं ही। लेकिन यह तो अनर्थ हो गया और मूर्ति को जड़ कहने लगे! मूर्तियों की, मंदिरों की, सभी की ज़रूरत है। जब तक अमूर्त नहीं मिल जाते, तब तक यह डोरी छोड़नी नहीं चाहिए। यह तो भारत का साइन्स है! ये तो मूर्तियाँ होंगी तो मंदिर बनेंगे और मंदिर बनेंगे तो उसे पुजारी-वुजारी सब मिल जाएँगे।

भगवान ने कहा है कि जब तक आर्तध्यान और रौद्रध्यान हों, तब तक मूर्ति के दर्शन करना। क्योंकि तब तक अमूर्त के दर्शन नहीं हो सकते। जो अमूर्त हैं, ऐसे भगवान के दर्शन, शुद्धात्मा के दर्शन नहीं हो सकते।

प्रश्नकर्ता : यह मूर्ति तो पत्थर है, उसके दर्शन से क्या मिलेगा?

दादाश्री : लेकिन वह भी दूसरे लोगों के लिए काम की है न! भगवान ने एकांतिक दृष्टि नहीं रखने को कहा है। सामुदायिक दृष्टि रखो। अनेकांत, मतलब छोटा बच्चा नंगा फिर रहा हो तो उसे कोई नहीं डाँटता, उसे कोई उलाहना नहीं देता लेकिन अगर पचास साल का आदमी नंगा घूम रहा हो तो उसे उलाहना देते हैं। तब अगर वह पचास साल वाला कहे कि 'मुझे क्यों उलाहना दे रहे हो? इस छोटे बच्चे को क्यों नहीं देते?' तब यदि हम उसे कहें कि, 'अरे भाई, तेरी उमर ज़्यादा हो गई है। इस छोटे बच्चे की उमर के अनुसार उसका धर्म ठीक है और तेरी उमर के अनुसार तेरा धर्म गलत है।' इस तरह सभी को सामुदायिक तरीके से देखना ज़रूरी है।

कई लोग कहते हैं कि 'ये लोग जड़ मूर्ति की पूजा करते हैं' लेकिन भाई, वे कहने वाले खुद ही जड़ हैं। उसका ही उन्हें भान नहीं है। जिन्हें आत्मा की प्राप्ति नहीं हुई, वे सभी जड़ ही हैं। मूर्ति तो आत्मा की खोज करने के लिए है। मूर्ति, कोई पत्थर नहीं है, वह महावीर हैं, पार्श्वनाथ हैं।

डेवेलपमेन्ट के प्रवाह में मूर्ति की भजना

'पूरी दुनिया मूर्ति को भजती है', मैंने सभी से ऐसा कहा है। मैं उसका सबूत देने के लिए तैयार हूँ। पूरी दुनिया मूर्ति को ही भज रही है। यदि कोई व्यक्ति कहे कि 'हम मूर्ति के विरोधी हैं', तो वह गलत बात है। लेकिन हमारे तीर्थंकर

भगवान! उनकी तो बात ही अलग है, आश्चर्यजनक है! यह सब ऐसा है कि यदि काम निकालना आ गया तो पूरा काम निकाल लेगा। हमें दर्शन करने चाहिए मूर्ति के... उन्हें जड़ मूर्ति मत मानना। मूर्ति वह तो अद्‌भुत है!

एक व्यक्ति मुझ से कहने लगा, 'इन मूर्तियों की क्या ज़रूरत है?' तब मैंने उसे समझया कि यदि एक ग्रेज्युएट व्यक्ति ऐसा कहे कि यह फर्स्ट स्टैन्डर्ड, सेकन्ड स्टैन्डर्ड और मेट्रिक, इन सभी कक्षाओं को हटा दो तो उसी तरह आप भी मूर्खता की बात कर रहे हो, मैंने उन भाई से ऐसा कहा, क्योंकि आने वाली पीढ़ियों के लिए मूर्तियाँ चाहिए। पहले वे मूर्ति की भजना करेंगे, फिर धीरे-धीरे प्रगति करेंगे। धीरे-धीरे एडवान्स बनेंगे। अत: फिर अमूर्त को भजेंगे। मूर्ति में से आगे बढ़ते-बढ़ते निरंतर डेवेलपमेन्ट हो रहा है।

श्रद्धा ही फल देती है

प्रश्नकर्ता : मूर्ति में देखने जैसा क्या है?

दादाश्री : मूर्ति में देखने जैसा क्या है? क्या पत्थर देखने जैसा है? आँखें देखने जैसी हैं? यह तो आंतरिक भाव लाने के लिए है कि यह भगवान महावीर की मूर्ति है! कैसे थे भगवान महावीर! कैसे वीतरागी! अभी तो, अब आंतरिक भाव नहीं हो पाते, इसलिए फिर मूर्ति पर आंगी की! उस सुंदर आंगी से चित्त एकाग्र होता है, और फिर भी चित्त एकाग्र नहीं हो तो घंटे बजाते हैं ताकि यदि बाहर से गीतों की आवाज़ हो या झगड़ा हो रहा हो, फिर भी चित्त वहाँ पर नहीं जाए। और फिर धूप जलाते हैं, उस सुगंध में तन्मयाकार रहते हैं। यह तो, किसी भी रास्ते पाँच इन्द्रियों को यहाँ एकाग्र रखते हैं। वह यदि सेकन्ड के छोटे से छोटे भाग में भी एकाग्र रहे, तब भी उतना तो कमाया न!

प्रश्नकर्ता : मूर्ति बोलती नहीं है, सुनती नहीं है, देखती नहीं है तो फिर उन्हें नमस्कार करने से हमें क्या फायदा होता है?

दादाश्री : जैसे कि अपनी माँ की फोटो हो, तो क्या वह कुछ बोलती या सुनती है? फिर भी हमें असर करती है या नहीं? असर नहीं करती? किसलिए?

प्रश्नकर्ता : वह तो पता है कि यह माँ है।

दादाश्री : माँ है और हमें माँ पर श्रद्धा है। अत: जिस मूर्ति पर हमें श्रद्धा हो, वह मूर्ति असर करती है। यदि श्रद्धा न हो तो नहीं करेगी। अत: मूर्ति काम नहीं करती, हमारी श्रद्धा काम करती है। यदि श्रद्धा हो तो वह काम की है।

अत: मूर्ति गलत नहीं है। जिनमें हमारी श्रद्धा न हो, उनकी मूर्ति रखने का कोई अर्थ नहीं। यदि श्रद्धा हो तो रखना।

और क्या पूछ रह थे?

प्रश्नकर्ता : सभी की मूर्तियाँ अलग-अलग क्यों है, जबकि परमात्मा तो एक ही है?

दादाश्री : मूर्ति तो वह परोक्ष भगवान है। भगवान भीतर हैं। बाहर मूर्ति को देखता है इसलिए उसे भगवान याद आते हैं। अब, मूर्ति अलग-अलग क्यों है? क्योंकि हर एक का दृष्टि बिंदु अलग-अलग है। जिसे जो पसंद है वह उस मूर्ति को भजता है और उसमें भी यदि किसी की श्रीनाथ जी से माँगी हुई मानता पूरी हो जाए तो ज़िंदगी भर के लिए उन्हीं पर श्रद्धा बैठ जाती है।

प्रश्नकर्ता : इन सभी तीर्थ स्थलों में जो भगवान की मूर्तियाँ हैं, वे भगवान वहाँ पर प्रत्यक्ष रूप से रहते हैं या सिर्फ भाव स्वरूप से ही हैं?

दादाश्री : प्रत्यक्ष रूप से कोई नहीं रहता, कोई खाली नहीं बैठा है कि मूर्ति में बैठा रहेगा। क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से तो वे खुद के देश में ही रहते हैं, वह तो हमारी रखी हुई मूर्ति है।

प्रश्नकर्ता : हमारी रखी हुई?

दादाश्री : हाँ। लेकिन जिसे जिसमें श्रद्धा हो, उसके लिए वह मूर्ति काम करती ही है। जिसे श्रद्धा नहीं है उसके लिए वह मूर्ति काम नहीं करेगी। मूर्ति पर श्रद्धा रखना यानी वह तो कोई कितना हृदय वाला हो तब श्रद्धा रहती है!

मूर्ति स्थापना-नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव

प्रश्नकर्ता : मूर्ति तो एक प्रतीक है तो सचमुच इस मूर्ति पूजा का रहस्य क्या है?

दादाश्री : मूर्ति का एक नाम होता है, सिर्फ मूर्ति ही नहीं होती। मूर्ति अर्थात् स्थापना। लेकिन कोई भी स्थापना नाम के बगैर नहीं होती, कि भाई ये कृष्ण भगवान हैं या महावीर भगवान हैं या अंबा माता जी हैं या जो जिस किसी के भी नाम से स्थापना हो। अत: यह मूर्ति दो प्रमाण से, नाम और स्थापना दो प्रमाण से और चार प्रमाण से भगवान कहलाते हैं। नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव। जो भाव से आएँ, वे भगवान कहलाते हैं। निरंतर आत्मभाव में जो भी रहते हैं, वे भगवान कहे जाते हैं। जबकि यह मूर्ति तो स्थापना कहलाती है। स्थापना से क्या फायदा होता है? नाम के साथ में होने के कारण, उनके गुण याद आते हैं कि ओहोहो! महावीर भगवान के कान में कील ठोकी थीं और कैसा-कैसा! जैसे कि अपने दादा लुटेरों को मारकर निकाल दिया हो और उनकी फोटो घर में हो, तो उनकी फोटो को देखते ही हमारे भीतर परिणाम बदल जाते हैं या नहीं? उसी तरह से इससे परिणाम बदल जाते हैं।

हम कैसे बोलते हैं? जब हम ॐ नमो भगवते वासुदेवाय बोलते हैं, तब कृष्ण भगवान भी दिखाई देते हैं और हम शब्द भी बोलते हैं। अब, कृष्ण भगवान, जो भले ही हमारी फिल्म में आए हुए हों, उनका जैसा भी चित्र हमारे ध्यान में हो, फिर वे मुरली वाले हों या अन्य रूप में हों लेकिन उनका नाम लेते ही वे तुरंत दिखाई देते हैं। बोलते ही दिखाई देते हैं। बोलते ही दिखाई नहीं दें, तो उसका अर्थ ही क्या?

सिर्फ नाम बोलेंगे तो नाम का फल मिलेगा। लेकिन साथ में उनकी मूर्ति दिखाई देनी चाहिए, तो दोनों का फल मिलेगा। नाम और स्थापना दो फल मिलें तब भी बहुत हो गया!

प्रश्नकर्ता : नाम, स्थापना के साथ-साथ अन्य दो, द्रव्य और भाव भी कहा न, तो वे समझाइए?

दादाश्री : नाम व स्थापना एकाग्रता के लिए हैं। 'नाम' स्थूल है। वह स्थूल भक्ति है। फिर 'स्थापना', वह सूक्ष्म भक्ति है, फिर 'द्रव्य', वह सूक्ष्मतर भक्ति है और अंत में 'भाव', वह सूक्ष्मतम है। ये चार प्रकार की भक्तियाँ हैं। यदि सिर्फ महावीर, महावीर बोलते हों, तो भी स्थूल भक्ति हुई और यदि स्थापना की यानी कि फोटो रखकर 'महावीर, महावीर' करें तो सूक्ष्म भक्ति कहलाती है। यदि मेरा फोटो रखकर भक्ति करे, उसकी तुलना में, मैं खुद हाज़िर होऊँ और मेरी हाज़िरी में भक्ति करे तो वह

सूक्ष्मतर भक्ति कहलाती है। और फिर मेरी आज्ञा ही पाले तो वह सूक्ष्मतम भक्ति कहलाती है। मेरा कहना है, हमारी आज्ञा उसके भाव में आ जाए तो वह भावभक्ति हो गई। वह तुरंत फल देती है। बाकी तीनों प्रकार की भक्ति बहुत ही भौतिक फल देने वाली है। और सिर्फ 'यही' रियली कैश है, इसलिए तो हम कहते हैं कि, 'दिस इज़ द कैश बैंक इन द वर्ल्ड (इस दुनिया में सिर्फ यही नकद बैंक है)।' इसे कैश बैंक किसलिए कहते हैं कि अभी 'यहाँ' पर उच्चतम भावभक्ति होती है।

नाम भक्ति भी गलत नहीं है। नाम का वैसा नियम नहीं है। नाम में तो 'राम' बोले तो भी चलेगा और कोई 'नीम' बोलता रहे तो भी चलेगा। सिर्फ बोलना चाहिए। जो बोलें उसका भीतर उपयोग रहना चाहिए, ताकि और कहीं पर उपयोग नहीं जाए। आत्मा को एक घड़ी भर भी अकेला छोड़ा जाए ऐसा नहीं है, इसलिए कुछ न कुछ उसके लिए उपयोग रखना चाहिए। अर्थात् नामस्मरण करते हैं, वह कुछ गलत नहीं है। कोई वस्तु गलत होती ही नहीं इस जगत् में। लेकिन नाम, स्थापना और द्रव्य, वे तीनों ही व्यवहार हैं और सिर्फ भाव ही निश्चय है। व्यवहार में तो अनंत जन्मों से यही का यही किया है और भटकते ही रहे हैं। आचार्य हुए, साधु हुए, साध्वी जी हुए, ऐसे ही भटकते रहे हैं, मार्ग नहीं मिला।

प्रत्यक्ष की प्रतिष्ठा है, प्रकट का व्यतिरेकपना

प्रश्नकर्ता : दादा, अक्रम मार्ग में मूर्ति पूजा की स्थापना के बारे में ज़रा स्पष्ट रूप से समझाइए न!

दादाश्री : हम कभी भी मूर्ति पूजा की स्थापना नहीं करते। क्योंकि मूर्ति में से तो अमूर्त होना है। लोगों के द्वारा स्थापना होती है। लेकिन हमारे हाथों मूर्ति पूजा की स्थापना नहीं होती। तब हम क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : दादा, वह स्पष्ट समझाइए।

दादाश्री : मूर्ति पूजा किसकी कही जाती है? जिनके जाने के बाद उनके प्रतीक की स्थापना करते हैं, उसे मूर्ति पूजा कहते हैं। अभी आपके यहाँ मेरी फोटो है आप उसकी भजना करते हो तो वह मूर्ति पूजा नहीं कहलाएगी। मैं यहाँ प्रत्यक्ष हूँ। इसे तो प्रकट का व्यतिरेकपना करना कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : प्रकट का व्यतिरेकपना! यह सही समझाया। कभी ज़रा ऐसा विकल्प हो जाता था कि फिर यह वाली मूर्ति पूजा क्या है? तो यह अच्छी स्पष्टा हो गई कि यह तो प्रकट का व्यतिरेक है।

दादाश्री : ऐसा करेंगे नहीं न! हम कभी ऐसी भूल कर सकते हैं? यह तो लोगों के मन में भी ऐसा ठस गया है कि दादा अमूर्त होने के बाद भी इस तरह से मूर्ति पूजा क्यों करवाते हैं? लेकिन मेरी फोटो की पूजा करना मूर्ति पूजा नहीं है। यह फोटो जो हाज़िर हैं उनकी है, उनका व्यतिरेकपना है। जो हाज़िर हैं, उनके दर्शन करने हैं।

हम यदि फोटो नहीं रखेंगे तो क्या करेंगे? 'सीमंधर स्वामी के दर्शन करता हूँ,' वे भी शब्द ही हैं न? शब्द भी मूर्त ही है न! शब्दों के बगैर आप किस तरह से उनके दर्शन कर सकोगे? अमूर्त के दर्शन भी आप शब्द के बगैर कैसे कर सकते हो?

इस शब्द को स्थापना कहते हैं। मूर्ति किसे कहा जाता है? उनके चले जाने के बाद, महावीर

के चले जाने के बाद में रखी मूर्ति को, महावीर की मूर्ति कही जाती है। आपको क्या लगता है? इसमें अंतर नहीं है? कोई व्यक्ति हाज़िर हो और उनकी फोटो लेकर भजना करें, तो वह परोक्ष भजना कहलाएगी या प्रत्यक्ष?

प्रश्नकर्ता : अगर वह व्यक्ति हाज़िर है तो प्रत्यक्ष।

दादाश्री : वह प्रत्यक्ष भजना कहलाती है। परोक्ष भजना किसे कहेंगे? जो खुद हाज़िर नहीं हैं, उनकी पूजा मूर्ति पूजा है। जिसे अमूर्त की प्राप्ति नहीं हुई है, उसे मूर्ति पूजा की ज़रूरत है। वह अमूर्त नहीं हुआ है। जबकि आप तो अमूर्त हो चुके हो। आपके लिए मूर्ति पूजा नहीं होनी चाहिए लेकिन ये सीमंधर स्वामी तो बहुत कार्यकारी है!

उनके दर्शन करने चाहिए या नहीं?

प्रश्नकर्ता : करने चाहिए।

दादाश्री : उनका नाम लेना चाहिए या नहीं लेना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेना चाहिए, दादा।

दादाश्री : उन्ही के पास तो जाना है, तो फिर अभी से उनसे संबंध बना लें तो क्या बुरा है?

प्रश्नकर्ता : जहाँ जाना है, उन्हें हम यहाँ पर व्यतिरेक में ले आए, दादा।

दादाश्री : नहीं। हम उनसे कहेंगे न, कि 'साहब, यदि आप हमें प्रत्यक्ष दर्शन नहीं देंगे तो हम आपकी स्थापना करके आपके दर्शन कर लेंगे। हम छोड़ेंगे नहीं।' लेकिन यदि लोग दादा की फोटो की पूजा करते हैं तब क्या आपको खराब लगता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : और यदि अन्य मूर्तियों की भजना करते हो, तो आपको ऐसा लगता है कि इस मूर्ति का दर्शन करना अच्छा है। फिर भी हम व्यवहार की खातिर मना नहीं करते। व्यवहार से सभी के दर्शन और निश्चय से अमूर्त के।

परोक्ष भक्ति का वैज्ञानिक रहस्य

प्रश्नकर्ता : गीता में भगवान ने कहा है, 'हे अर्जुन! तू मुझे इन आँखों से नहीं देख सकता। मैं तुझे अलौकिक नेत्र देता हूँ, दिव्यचक्षु। जिनके द्वारा तू मेरे दर्शन कर पाएगा, यदि इन आँखों से भगवान के दर्शन नहीं हो सकते तो फिर मंदिर में किसके दर्शन करते हैं?

दादाश्री : भगवान के, भगवान की मूर्ति के। इन चमड़े की आँखों से मूर्ति के दर्शन होते हैं। कृष्ण भगवान, महावीर भगवान की मूर्तियों के दर्शन होते हैं। अमूर्त के दर्शन नहीं होते।

प्रश्नकर्ता : तो मूर्ति के दर्शन से हमें क्या फायदा होता है?

दादाश्री : उससे मन एकाग्र होता है। उतने समय तक शांति रहती है लेकिन मूर्ति खुद उसे स्वीकार नहीं करती। जब आप कृष्ण भगवान के दर्शन करते हो तो वे स्वीकार नहीं करते, क्योंकि वे खुद वहाँ पर हैं ही नहीं। अत: वह क्या करती है कि उसे डिस्पेच कर देती है। आपके भीतर जो भगवान बैठे हैं, उन्हें वह डिस्पेच कर देती है। उसे परोक्ष भक्ति कहते हैं। क्या कहते हैं? आप प्रत्यक्ष भक्ति नहीं करते, क्योंकि आप भीतर वाले को नहीं पहचानते इसीलिए आपको बाहर वाली मूर्ति की मदद लेनी पड़ती है। इसलिए फिर मूर्ति आपको

वापस वहीं भेज देती है कि 'लो, आपका भक्त मेरे पास आकर यह रख गया है, यह आपका है।' उसे परोक्ष भक्ति कहते हैं। भीतर की भक्ति प्रत्यक्ष भक्ति कहलाती है।

पत्थर की मूर्ति क्या सूचित करती है? जिनमें मेरे समान परमात्म तत्त्व रहा हुआ है, उन्हें तू पहचान। जिनमें ज्ञान प्रकट हुआ है, उन्हें तू भज।

अद्‌भुतता मूर्तियों की!

देखो, इंसान यह सिद्धांत समझ गया कि वह ऑन द मोमेन्ट आपको पहुँचता है। अंतर सिर्फ इतना ही है कि 'यहाँ होकर यों रहकर ऐसे आता है।' तो धन्य है न, इस खोज को! किसी को मूर्ति की इस खोज पर धन्यता का अनुभव होता है? 'संसार से थक गया.... सुख देखे, विषयों के सुख देखे, कीर्ति के सुख देखे, सभी से ऊब गया और अब, मुझे समकित दीजिए,' आप वहाँ ऐसी जो भावना करते हो, उसे वे खुद नहीं स्वीकार नहीं करते, क्योंकि वे तो वीतराग हैं। उनका काम क्या है? मूर्ति का? वीतराग। अत: यहाँ से हम जो भावना करते हैं, वह परोक्ष भावना है, उसे वे खुद स्वीकार नहीं करते। इसलिए अपने यहाँ यह बात सीधी अपने आत्मा को पहुँचा देते हैं। इतना बड़ा आश्चर्य है! हिन्दुस्तान की मूर्तियों का!

मूर्ति सिखलाती है वीतरागता

ये मूर्तियाँ, लोगों को जागृति में लाने का एक साधन है और फिर मूर्तियों में तो बहुत प्रकार का साइन्स रखा गया है। सिर्फ, इतना ही नहीं। वे कहती हैं कि यों करके बैठे हैं। कैसे?

प्रश्नकर्ता : समाधि दशा में, पद्मासन में।

दादाश्री : पैर पर पैर रखकर, हाथ पर हाथ रख कर। वह बताती है कि यदि मोक्ष में जाना है तो कुछ भी करने जैसा नहीं है।

यदि तुझे मोक्ष में जाना है तो इस एक जन्म के लिए हाथ-पैर मोड़कर बैठे रहना यानी कि, मशीनरी बंद करके बैठे रहना फिर भी तेरा सबकुछ चले, ऐसा है!

प्रश्नकर्ता : मोक्ष में जाने के लिए और कुछ करने की ज़रूरत नहीं है।

दादाश्री : सबकुछ व्यवस्थित है, तू अपने आप यह सब करता जा न! पैर भी नहीं हिलाने हैं, न ही हाथों से कुछ करना है। वीतराग ऐसा सूचित करते हैं। न तो साथ में स्त्री को... लक्ष्मी जी को बैठाया है, न ही अन्य किसी को! न तो तलवार है, न ही भाला है। न ही साँप लपेटे हैं! कैसे भगवान हैं! मोक्ष में जाने की यह अंतिम निशानी है। यह अंतिम मुद्रा कहलाती है। ऐसा-वैसा कुछ भी नहीं करना है। पैर पर पैर रखकर बैठे हैं, ऐसे करके! व्यवस्थित है, ऐसा कहते हैं। ये तो मैंने दो-चार ही कारण बताए हैं लेकिन बहुत से कारण हैं। मूर्ति (पूजा) के इतने सारे कारण हैं।

वीतराग क्या कहते हैं? हम कुछ भी स्वीकार नहीं करते हैं और तू जो देगा, वह तुझे रिटर्न विथ थेन्क्स। तू चार आने डालेगा तो तुझे अनेक गुना मिलेगा। फूल चढ़ाएगा तो अनेक गुना फूल मिलेंगे और गालियाँ देगा तो वे भी तुझे अनेक गुना मिलेंगी। एक बार वीतराग के लिए मन-वचन-काया की एकता से खर्च करके तो देख! इन वीतरागों की ही ऐसी मूर्ति होती है, और किसी की ऐसी मूर्ति देखी है? यह तो वीतराग मुद्रा कहलाती है! जैसी जिनकी मूर्ति, वैसा उनका डेवेलपमेन्ट।

मूर्ति पूजा करने से क्या फायदा होता है? यह अपना मूर्तियों का विज्ञान है। मूर्ति की पूजा कब तक करनी चाहिए? तब तक, जब तक कि अमूर्त के दर्शन नहीं हो जाते। अत: आत्मा अमूर्त है। उसके दर्शन हो जाए तब तक मूर्ति को पकड़कर रखना। हमें यह सब अवलंबन तो चाहिए न? जब तक समुद्र में स्टीमर न मिल जाए, तब तक यदि एक पटिया भी हाथ में आ जाए, तो उस पटिया से भी तैरना तो चाहिए न! जब स्टीमर आएगी तब पटिया छोड़ देना। ठीक उसी तरह से इस मूर्ति की ज़रूरत है।

मूर्त-अमूर्त की अनुभूति

प्रश्नकर्ता : मूर्त ज्ञान और अमूर्त ज्ञान में क्या अंतर है?

दादाश्री : जो इन इन्द्रियों से समझ में आता है, वह सारा मूर्त ज्ञान हैं। जो पाँच इन्द्रियों की हेल्प से, बुद्धि की हेल्प से, मन की हेल्प से समझ में आता है, वह सारा मूर्त ज्ञान है।

अमूर्त के दर्शन करने जैसे हैं। सभी शास्त्र अमूर्त के दर्शन करने के लिए हैं। लेकिन शास्त्रों में सारा मूर्त ज्ञान है और अमूर्त ज्ञान तो अमूर्त भाषा में होता हैं। जो इन्द्रियों से दिखाई देता है, वह सारा मूर्त ज्ञान है।

जब हम मूर्त ज्ञान देते हैं, उस दिन भगवान उस पर अपनी कृपा उतारते हैं, अमूर्त की। भीतर वाले भगवान उस पर कृपा उतारते हैं। दादा की आज्ञा में रहा, इसलिए।

प्रश्नकर्ता : अमूर्त की अनुभूति क्या है?

दादाश्री : ये लोग इतना समझ गए हैं कि शक्कर मीठी है। यह तो लोग शास्त्रों से भी जान जाते हैं। लेकिन यदि पूछें कि मीठी अर्थात् क्या? तो उसके लिए शब्द नहीं होते। अत: मुझे क्या करना पड़ता है? आपके मुँह में एक टुकड़ा रख देता हूँ तो आप खुद ही समझ जाते हो, मुझे बताना नहीं पड़ता कि मीठी अर्थात् क्या? इसी प्रकार यह आत्मा की अनुभूति है। जब हम आपको ज्ञान देते हैं न, तब अपने आप ही आपको आत्मा की अनुभूति हो जाती है।

अमूर्त प्रकाशमान होना चाहिए। जीवमात्र में अमूर्त तो है ही, लेकिन यदि प्रकाशमान हो जाएगा तब काम में आएगा न!

'मूर्ति' समकित तक ले जाएगी

प्रश्नकर्ता : आत्मा जगाने के लिए मूर्ति की ज़रूरत है क्या?

दादाश्री : मूर्ति की बहुत ज़रूरत है। भगवान ने साफ-साफ कहा है कि सत्‌देव, सत्‌धर्म और सद्‌गुरु की ज़रूरत है। लेकिन जब तक समकित नहीं हुआ है, सच्चे सत्‌देव, सत्‌धर्म और सद्‌गुरु प्राप्त नहीं हुए हैं, तब तक व्यवहार के देवताओं की ज़रूरत है। 'स्वरूपज्ञान' होने के बाद निश्चय के देवता की ज़रूरत है। फिर कोई कहे कि देवता की ज़रूरत नहीं है तो वह नहीं चलेगा। व्यवहार के देवता मूर्ति स्वरूप से हैं, निश्चय के देवता अमूर्त हैं।

प्रश्नकर्ता : मूर्ति आत्मा का कल्याण नहीं कर सकती?

दादाश्री : जब तक आत्मा का भान नहीं हुआ है, तब तक मूर्ति के पीछे पड़ो, वह मूर्ति समकित तक ले जाएगी। मूर्ति का तिरस्कार मत करना, क्योंकि वीतरागों के नाम पर हैं। वहाँ

वीतरागों की स्थापना हुई है और मूर्ति के पीछे शासन देवी-देवता रहे हुए हैं।

वीतरागों पर मोह, जिससे वीतरागता आए ऐसी सभी चीज़ों पर मोह, वह प्रशस्त मोह कहलाता है। फिर वह मोह चाहे मूर्ति पर ही क्यों न हो? परंतु वह वीतरागता लाने वाली चीज़ है।

अमूर्त के अवलंबन से प्राप्त होता है अमूर्त

प्रश्नकर्ता : इष्ट मूर्ति के माध्यम से कितने अंश तक आत्म दर्शन संभव है? उसकी प्रक्रिया समझाए?

दादाश्री : इष्ट मूर्ति अर्थात् पत्थर की मूर्ति या सजीवन मूर्ति?

प्रश्नकर्ता : नहीं, पत्थर की।

दादाश्री : नहीं। उससे आत्म दर्शन संभव नहीं है। वह आपको संसार फल देगी। उससे भौतिक फल और पुण्य मिलेंगे। लेकिन यदि ऐसा नहीं करोगे तो गलत रास्ते पर चले जाओगे। अत: हम क्या कहते हैं? कि मूर्ति के दर्शन करते-करते किसी दिन अमूर्त को प्राप्त कर लोगे। क्योंकि मूर्ति के दर्शन करने से आवरण टूटते जाते हैं और अमूर्त से आवरण हटते जाते हैं। फिर कभी उसे अन्य संयोग भी मिल आएँगे, ज्ञानी पुरुष के तो अमूर्त प्राप्त हो जाएगा, वर्ना अमूर्त प्राप्त नहीं हो सकता।

सजीवन मूर्ति से मिले बगैर अमूर्त नहीं बन सकते। मूर्ति का अवलंबन मूर्त बनाएगा और अमूर्त का अवलंबन अमूर्त बनाएगा।

रिलेटिव यदि रिलेटिव के दर्शन करे तो रिलेटिव ही रहेगा। जब अमूर्त के, रियल के दर्शन करेगा तभी रियल में जाएगा।

प्रश्नकर्ता : वह तो आपने कहा है न, कि जब तक अमूर्त के दर्शन नहीं होते तब तक मूर्त पर आसक्ति रहेगी!

दादाश्री : हाँ, जब तक अमूर्त के दर्शन नहीं हो जाते तब तक मूर्ति पर आसक्ति रखनी है लेकिन अमूर्त के दर्शन होने के बाद मूर्ति की ज़रूरत नहीं है।

जब तक अमूर्त के दर्शन नहीं हो जाते तब तक मूर्ति पूजा ही ध्येय है। अमूर्त के दर्शन होने के बाद, वह ध्येय स्वरूप नहीं रहती, फिर अमूर्त ही ध्येय बन जाता है।

जो अमूर्त को समझ गया वह अध्यात्मी है। जब से अमूर्त की प्रतीति बैठती है तब से वह अध्यात्मी बन जाता है।

ज्ञानी में मूर्तामूर्त दोनों के दर्शन होते हैं

ज्ञानी पुरुष के अलावा किसी को भी अमूर्त का भान नहीं है। जब तक अमूर्त अलग नहीं हुआ है तब तक देहधारी मूर्तिरूपी कहलाते हैं जबकि इनमें तो अलग ही हो चुका है, मूर्त और अमूर्त।

ज्ञानी में खुद में ही अलग हो चुका है इसलिए मूर्तामूर्त लिखा है और जिनमें अलग हो चुका है, वे मूर्तामूर्त कहलाते हैं। मूर्त भी हैं और अमूर्त भी, दोनों अलग।

प्रश्नकर्ता : अत: शुद्ध और अशुद्ध दोनों अलग-अलग हैं?

दादाश्री : नहीं, शुद्ध और अशुद्ध नहीं। वहाँ अशुद्ध की बात ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर ये परमाणु भी शुद्ध हैं?

दादाश्री : परमाणुओं की शुद्धता की बात

ही नहीं है। वे मूर्त स्वरूप हैं। मूर्त अर्थात् वे हमें दर्शन करने के काम आते हैं। अत: उनके दर्शन इन्द्रियों से होते हैं जबकि अमूर्त के दर्शन तो जब ज्ञानी पुरुष ने ज्ञान दिया हो तब उससे होते हैं। दोनों ही प्रकार के दर्शन हो सकते हैं। जबकि संसार व्यवहार में रिलेटिव में तो सिर्फ मूर्ति के ही दर्शन होते हैं। यदि अभी वे (जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है) सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे तो उन्हें सिर्फ मूर्ति के ही दर्शन होंगे, अमूर्त के दर्शन नहीं होंगे। दिव्यचक्षु के बगैर तो अमूर्त के दर्शन नहीं हो सकते। अत: ये जो दिव्यचक्षु प्राप्त हुए हैं तो इससे अमूर्त के भी दर्शन कर सकते हैं और मूर्त के भी दर्शन कर सकते हैं। इन चर्मचक्षुओं से मूर्त के दर्शन होते हैं और दिव्यचक्षु से अमूर्त के दर्शन होते हैं, यानी कि दोनों दर्शन एक साथ होते हैं।

प्रश्नकर्ता : यह समझ में आता है और वह भी समझ में आता है?

दादाश्री : हाँ, दोनों। जिसे अपने आत्मा का दर्शन हो गया है, उसे दोनों ही होते हैं, आपमें आत्मा दिखाई देगा सभी में दिखाई देगा। जो खुद के आत्मा को जानता है वह दूसरों के आत्मा को भी जान सकता है। जिसने एक का जाना उसने सब जान लिया। जिसने आत्मा को जान लिया उसने सबकुछ जान लिया, कुछ भी जानना बाकी नहीं रहा।

प्रश्नकर्ता : 'अभेदता से दर्शन करते-करते अंत में अमूर्त मिल गया।'

दादाश्री : ज्ञानी पुरुष के साथ रहकर अभेदता से दर्शन किए, इसीलिए अमूर्त पद प्राप्त हुआ, अनंत जन्मों से जो मूर्ति में मूर्त भगवान को भज रहा है और जो देह को 'मैं' मानता था, वह सब पूरी तरह से चला गया और खुद अमूर्त पद में बैठ गया।

शुद्धात्मा अमूर्त है इसलिए उसका *लक्ष* (जागृति) नहीं आता। मूर्ति का *लक्ष* आता है, अमूर्त का *लक्ष* नहीं आ सकता। शुद्धात्मा का *लक्ष* कभी भी नहीं आता। और 'मैं चंदूलाल हूँ', वह *लक्ष* कभी भी नहीं जाता। यह तो, जब हम ज्ञान देते हैं तब शुद्धात्मा का *लक्ष* आता है। अमूर्त की अनुभूति सिर्फ, ज्ञानी पुरुष ही करवा सकते हैं।

यह आपके अंदर भी 'हमने' प्रतिष्ठा ही की है। इसीलिए तो आप 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा बोल उठते हो! मूर्ति में प्रतिष्ठा 'ज्ञानी पुरुष' करते हैं। जड़ मूर्ति में 'ज्ञानी पुरुष' प्रतिष्ठा करें तब भी फल देती है, तो जीवंत मूर्ति में प्रतिष्ठा करें तो क्या फल नहीं देगी?

यह सभी तो तालियाँ बजाएँगे और भगवान को 'तू' और 'मैं' गाएँगे और यदि मूर्ति को भजेगा तो मूर्ति मिलेगी। देह अच्छी मिलेगी, मोटर, बंगले मिलेंगे, लेकिन जब तक अमूर्त के दर्शन नहीं हो जाएँ, 'ज्ञानी पुरुष' अमूर्त के दर्शन नहीं करवा दें, तब तक मूर्ति की उपासना करना, और जब अमूर्त की उपासना करता है तब मोक्ष होगा। मूर्ति की उपासना तो अनंत जन्मों से करते ही आए हैं न? 'ज्ञानी पुरुष में तो अमूर्त है और मूर्ति भी है। 'ज्ञानी पुरुष मूर्तामूर्त हैं, इसलिए उनकी उपासना करने से मोक्ष होता है!

महात्माओं को किस तरह से दर्शन करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : मुझ जैसे ने ज्ञान लिया है तो मंदिर में जाकर क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अब 'चंदूभाई' से ही कहना, 'प्रणाम करना भाई! यदि अंदर भाव हो तो, और यदि नहीं हो तो कोई बात नहीं। लेकिन उस तरफ घृणा नहीं रहनी चाहिए, अभाव नहीं रहना चाहिए' वह रिलेटिव व्यवहार है। रिलेटिव में हर्ज नहीं है। रिलेटिव में तो यदि मस्जिद में जाए तब भी दर्शन कर सकते हैं।

अत: रिलेटिव में निष्पक्षपाती और रियल में निश्चय से सिर्फ शुद्धात्मा ही। रियल भक्ति एक ही है।

भगवान तो खुद के भीतर ही हैं लेकिन इस बात का भान नहीं है। इसीलिए तो ज्ञानियों ने बाहर मूर्ति रखी है, ताकि भान बगैर के लोग मूर्ति को देखें। भगवान को देखकर दर्शन करें। यह तो ऐसा है कि रियल का भान नहीं है इसलिए रिलेटिव में भान होता है और वहाँ से रियल में आता है। मूर्ति की स्तुति व भक्ति करने से मन कोमल होता जाता है।

मूर्तियाँ क्यों रखी गई हैं? उसके पीछे क्या भावना है? ''साहब, आप सनातन सुख वाले हैं और मैं तो 'टेम्परेरी' सुख वाला हूँ। मुझे भी सनातन सुख पाने की इच्छा है।'' भगवान सनातन सुख वाले हैं, तभी तो देखो न, मूर्ति है फिर भी हम से ज़्यादा सुंदर दिखाई देते हैं। मानो! देखते ही रहें!

सही प्रतिष्ठा के लिए साफ चाहिए

प्रश्नकर्ता : अलग-अलग मूर्तियों में अंतर होता है क्या?

दादाश्री : बहुत अंतर होता है। हम जो प्रतिष्ठा करते हैं वह आपको फल देती है। प्रतिष्ठा अर्थात् भीतर चेतन डालना। हिन्दुस्तान की मूर्तियाँ कोई गप्प नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : कईं मूर्तियों को देखकर तो एकदम से उल्लास आ जाता है।

दादाश्री : हाँ, उल्लास आ जाता है।

प्रश्नकर्ता : कुछ में नहीं आता।

दादाश्री : हाँ। कुछ में नहीं आता लेकिन किसी-किसी जगह तो उल्लास आता है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या वहाँ पर ज़्यादा अच्छी तरह से प्रतिष्ठा हुई होगी, इसलिए वहाँ उल्लास आता है?

दादाश्री : हाँ। हुई होती है।

जब लोग दर्शन करते हैं, तब वहाँ प्रतिष्ठा होती रहती हैं

प्रश्नकर्ता : यह मूर्ति, वह ह्यूमन क्रिएशन है न? मनुष्य की रचना है? तो फिर इसमें भगवान का अस्तित्व किस तरह से आता है?

दादाश्री : भगवान तो, जिन्हें श्रद्धा है उसके लिए है, उसके द्वारा प्रतिष्ठा की हुई होती है। 'भगवान' की स्थापना हम करते हैं, उसके भीतर प्रतिष्ठा करते रहते हैं। उसमें आरोपण करते रहते हैं हम (लोग)।

प्रतिष्ठा करने से वह फल देती है। हम उसमें जितनी प्रतिष्ठा करते हैं, उतना ही वह प्रतिष्ठा फल देती है। और फिर फल देकर पूर्ण हो जाती है। अत: फिर से प्रतिष्ठा करनी पड़ती है। फिर से जब लोग दर्शन करते हैं तब प्रतिष्ठा होती रहती हैं। जीवित व्यक्ति मूर्ति की पूजा करता है तो उससे वह मूर्ति सजीव होती जाती है।

अब, किसकी मूर्ति फलदायी होगी? जिसने उस मूर्ति को सजीव किया होगा, उसकी। मूर्ति में प्रतिष्ठा करके उसे सजीव करते हैं, जब उसके भीतर आत्मा डालते हैं, तब वह प्रतिष्ठा कौन कर सकता है? जिनमें एक सेन्ट भी बुद्धि नहीं है, वह प्रतिष्ठा कर सकता है।

अपने यहाँ यदि भगवान की प्रतिष्ठा हो तो वे भगवान ऐसे होंगे कि बोल उठेंगे! प्रतिष्ठा ज्ञानी पुरुष के हाथों होनी चाहिए। वह लोगों का कल्याण कर देगी! विश्वास होना चाहिए, श्रद्धा होनी चाहिए। आपकी श्रद्धा और भगवान दोनों। हमने प्रतिष्ठा करके स्थापित की हो और दूसरी तरफ आपकी श्रद्धा हो, तो आपका कल्याण हो जाएगा!

मूर्तामूर्त ज्ञानी प्राप्त कराते हैं अमूर्त

प्रश्नकर्ता : मंदिरों में मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा की जाए तो क्या मूर्तियों की शक्ति बढ़ जाती है?

दादाश्री : हाँ, बढ़ती है न। हुक्के में प्राण प्रतिष्ठा करूँ, तब उसमें भी शक्ति बढ़ जाए और मूर्ति में तो एक सभी लोगों के आरोपित भाव हैं। वहाँ प्राण प्रतिष्ठा करने से फल देती है। लेकिन इस काल में सच्ची प्राण प्रतिष्ठा होती नहीं है। 'हम' सच्ची प्राण प्रतिष्ठा करते हैं, लेकिन उदय के बिना 'हम' नहीं करते। लोगों का कल्याण हो, उसके लिए हम प्रतिष्ठा करते हैं। लोगों में जितनी शक्ति होती है, उसके अनुसार प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। और यह प्रतिष्ठा कैसे भाव से करते हैं? कलुषित भाव से। कलुषित भाव निकले नहीं होते और प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। अंदर ग़ज़ब का कलुषित भाव हाज़िर रहता है। छेड़ा जाए तो फन फैलाते हैं, ऐसी प्रतिष्ठा करेंगे तो कैसा फल देगी?

प्राण प्रतिष्ठा करने का अधिकार किसे है? जिनके कलुषित भाव पूर्णरूप से निकल गए हैं, उतना ही नहीं लेकिन उनके निमित्त से किसी को भी कलुषित भाव नहीं होता हो। वे तो 'पंच परमेष्टि' में गिने जाते हैं, और ऐसे व्यक्ति के हाथों से प्राण प्रतिष्ठा होनी चाहिए। फिर भी, यह 'मामा नहीं हो, इसके बजाय तो मुँह बोले मामा अच्छे।' बाकी प्रतिष्ठा तो ऐसी होनी चाहिए कि मूर्ति बोल उठे, हँस उठे! हम जहाँ-जहाँ प्रतिष्ठा करते हैं, वहाँ-वहाँ मूर्ति बोल उठती है, हँस उठती है! हमारी इच्छा तो बहुत होती है कि सभी जगह मंदिरों में प्रतिष्ठा हो, लेकिन सत्ता हमारी नहीं है न? 'व्यवस्थित' के हाथ में है सब, इसलिए हम उदय के अनुसार करते हैं।

जयपुर बिड़ला मंदिर में हुई प्रतिष्ठा

एक बार जब हम यात्रा पर गए थे न, तब अड़तीस दिनों में हमारे एक-दो जगह प्रतिष्ठा करने के उदय आए थे। और एक जगह, देरासर में भी ऐसा उदय आया था। हमारे निमित्त से वीतराग की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी। हमने प्रतिष्ठा की थी लेकिन उदय के बगैर हम नहीं करते। लेकिन ये बिड़ला के जो दो मंदिर थे न, वहाँ उन दो मंदिरों में उदय आ गया था। अजमेर में या जयपुर में?

नीरू माँ : जयपुर में और अयोध्या में।

दादाश्री : हम जयपुर गए थे। वहाँ एक जैन हैं, वे कविराज के रिश्तेदार थे। तो वहाँ जाने के बाद वे कहने लगे, 'यहाँ पर एक रामचंद्र जी का मंदिर है, वह इन्होंने बनवाया है। इन बिड़ला ने।' तब मैंने पूछा, 'कितने साल हो गए?' तब वे कहने लगे, 'दो साल हो गए।' मंदिर बहुत अच्छा था। नई डिज़ाइन का था। बहुत बड़ा नहीं, लेकिन नई डिज़ाइन। उसमें रामचंद्र जी, सीता और

लक्ष्मण की तीनों संगमरमर की मूर्तियाँ, बड़ी और ज़बरदस्त थीं! हम सभी पैंतीस लोग वहाँ पर जाकर बैठ गए। क्योंकि हमें तो सभी को बैठना था। क्योंकि हमारा तो यह सब निष्पक्षपाती है न, अत: शिव का बड़ा मंदिर हो तब भी जाते हैं, सभी जगह जाते हैं। निष्पक्षपाती हैं न हम इसलिए वहाँ जाकर बैठ गए। फिर वहाँ पर उनका, भगवान रामचंद्र जी का उदय, तो फिर भीतर से कहा, 'प्रतिष्ठा करो।' अत: प्रतिष्ठा हो गई। दादा ने प्रतिष्ठा की। ये सब लोग कुछ-कुछ बोल रहे थे, कुछ गा रहे थे और मैंने बैठे-बैठे, दस मिनट में प्रतिष्ठा की, उच्च प्रकार की। फिर प्रतिष्ठा करने के बाद वहाँ जो पुजारी खड़ा था न, वह कहने लगा कि दो साल से इन मूर्तियों को स्थापित किया है। लेकिन आज वे हँसी हैं! धन्य है।

नीरू माँ : मैंने कभी भी इन्हें इतना हँसते हुए नहीं देखा। आज आपने ऐसा क्या किया कि भगवान रामचंद्र जी इतने हँस रहे हैं?

दादाश्री : 'आज हमने प्रतिष्ठा की है, लोगों का कल्याण हो, उस हेतु से हमने प्रतिष्ठा की है।' फिर वह पुजारी भगवान को हँसता हुआ देखकर रोने लगा कि ओहोहो! क्या हो गया! ये भगवान कभी हँसे ही नहीं थे दो सालों से! अत: तुरंत ही भगवान को पहनाई हुई माला लेकर यहाँ आया और मुझे पहना दी। मैंने पूछा, 'क्या है, भाई, यह क्यों?' तब कहने लगा कि 'आपने ऐसा क्या किया कि जो भगवान कभी भी हँसे नहीं, आज वे हँसने लगे? मैंने खुद देखा है!'

मैंने कहा, 'आज प्रतिष्ठा की है। अब तो रोज़ हँसेंगे, यदि तुझे देखना आए तो रोज़ हँसेंगे। वर्ना तुझे कुरूप लगेंगे।' जिसे देखना नहीं आए उसे कैसे लगेंगे?

प्रश्नकर्ता : कुरूप लगेंगे।

दादाश्री : हाँ। उसके बाद फिर अयोध्या में भी ऐसा ही हुआ। वे सभी तो आश्चर्यचकित रह गए! सभी कहने लगे, हम तो सभी गाँव वालों को इकट्ठा करेंगे। तब मैंने कहा, नहीं, आज मत इकट्ठा करो। आज हमें फुर्सत नहीं है।

अब, लोग ऐसा कहते हैं कि आप सभी शहरों में हर मंदिर में प्रतिष्ठा करो। लेकिन मुझे फुर्सत नहीं है भाई। ऐसी झंझट मैं कहाँ करूँ, इतनी सारी?

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें कैसे पता चलेगा कि मूर्ति में वास्तविक प्राण प्रतिष्ठा हुई है?

दादाश्री : वह पुजारी मुझे माला पहना गया तो वह कैसे पहना गया?! तुरंत ही पता चल जाता है। जिसका हार्ट प्योर है तो मूर्ति के सामने जाते ही उसे वह मूर्ति हँसती हुई देखाई देती है। लेकिन यदि उसमें प्रतिष्ठा की हुई हो तो। और जिनके हार्ट गंदे होते हैं, उन्हें कैसे दिखाई दे सकती है? भीतर साफ होना चाहिए। ये आँखें थोड़ी कमज़ोर होंगी तो चलेगा। चश्मा लगाकर देखना, लेकिन भीतर साफ होना चाहिए।

ज्ञानी पुरुष के हाथों प्रतिष्ठा हुई यानी कि हो ही गया! आत्मा बोल उठेगा। सबकुछ सफल होगा!

'त्रिमंदिर' है जगत् कल्याणी संज्ञा

अत: बाद में यह मंदिर बनाने का सोचा। यों तो मैं आश्रम बनाने के मत में नहीं था। मैंने तो आश्रम भी नहीं बनाया। हम तो कही भी बैठकर सत्संग करते हैं।

प्रश्नकर्ता : जैन धर्म तो आश्रम बनाने के लिए मना ही करता है न?

दादाश्री : हाँ। लेकिन उनके लिए वह ठीक है। अतः हम आश्रम के विरुद्ध हैं। इन मंदिरों के लिए संज्ञा हुई इसीलिए बनवाया है। जगत् कल्याण के लिए यह संज्ञा है हमारी!

वर्ना मैं तो ईंटें लगाने वाला इंसान ही नहीं हूँ। लोगों ने ये जो लगाई हैं वे भी व्यर्थ ही लगाई हैं। लेकिन इसमें से यह, इसे फँसाव कहो या फिर कुछ भी कहो, लेकिन यह फँसाव हो गया है। बाकी, हम तो ईंटें लगाने वाले इंसान ही नहीं है।

फिर साथ में ऐसा भी विचार आया कि यह सीमंधर स्वामी का मंदिर बन जाए तो अच्छा। यह लोगों के हित के लिए है। यहाँ पर लोग जितने सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे, उतना ही विषेश फलदायी होगा। क्योंकि ये हाज़िर तीर्थंकर कहलाते हैं। बहुत हेल्प फुल हैं!

तो अभी हमारा ईंट लगाने का समय आया। वर्ना हमारे ज्ञान में ईंट लगाने का समय था ही नहीं।

अतः कई लोग ऐसा कहते हैं कि दादा भी मंदिर बनवाने में लग गए! लेकिन अब हम ऐसे संयोग में आ पहुँचे हैं।

छूटे मतार्थ, तो आए आत्मार्थ

अतः अंत में हमें आवश्यक रूप से मंदिर बनाना ही पड़ा, इस मतार्थ को निकालने के लिए! वहाँ तीन मंदिर बना रहे हैं। यह सीमंधर स्वामी का, जो कि जीवित हैं, उनके लिए बन रहा है। कृष्ण भगवान भी जीवित हैं उनका भी बन रहा है और 'शिव' अर्थात् कल्याण स्वरूप ज्ञानी, वे भी जीवित हैं। अतः तीनों मंदिर बन रहे हैं। सभी लोग दर्शन करेंगे। उससे इन लोगों का सारा मतार्थ चला जाएगा, ऐसी प्रतिष्ठा करूँगा मैं इन मूर्तियों में! मूर्तियाँ बाते करेंगी आपसे! मूर्तियाँ बातें करेगी! यहाँ पर जो देवी-देवता हैं, वे धर्म का रक्षण करेंगे।

प्रश्नकर्ता : मंदिर तो कई हैं न? फिर नया बनाने की क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : यह तो मतार्थ निकालने के लिए है। लोग आत्मार्थ के बजाय मतार्थ में पड़ गए हैं। वह मतार्थ निकल जाएगा तो आत्मार्थ में आ जाएँगे। हिन्दुस्तान में मतार्थ नहीं रहना चाहिए। जो कृष्ण भगवान को भजता है, सीमंधर स्वामी को भी भजे और और इस तरफ शिव भगवान को भजे, ऐसा यह संकुल बन रहा है।

प्रश्नकर्ता : पहले आपने कहा था कि ऐसे चौबीस मंदिर बनेंगे। वह बात सच है?

दादाश्री : हाँ।

यह इच्छा है 'हमारी'

संसार में से मतभेद कम कर देने हैं। जब मतभेद दूर हो जाएँगे न, तब ये सही बात को समझेंगे। इतने मतभेद कर दिए हैं कि यह शिव की एकादशी और यह वैष्णव की एकादशी, एकादशी भी अलग-अलग! तो मैंने मंत्रों को एक कर दिया। इन मंत्रों को साथ रखो। क्योंकि मन हमेशा शांत रहना चाहिए न? उसे इन लोगों ने ये सारे मंत्र भी बाँट लिए और अब मैं इन सभी को इकट्ठा करके ऐसी प्रतिष्ठा करूँगा, जिससे कि धीरे-धीरे लोग सारे मतभेद भूल जाएँ। यह इच्छा है हमारी, और कोई इच्छा नहीं है।

निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का निर्माण

यह निष्पक्षपाती धर्म है। पूरा अवसर्पिणीकाल बीत गया। अभी तक तो मतार्थ में ही चलते रहे! जब तक भगवान महावीर का शासन है, तभी तक धर्म है। फिर तो धर्म का अंश भी नहीं रहेगा, मंदिर-किताबें कुछ भी नहीं रहेंगे। अत: अठारह हज़ार साल तक में अगर सावधान हो जाएँ और मतार्थ में से छूट जाएँ और ऋषभदेव भगवान ने जैसे निष्पक्षपाती रूख के बारे में बताया था, फिर से यदि वैसा निष्पक्षपाती रूख आ जाए तो लोगों का कल्याण हो जाएगा! किसी का किसी से आमने-सामने बैर व झगड़ा नहीं होना चाहिए। यदि मंत्र एक साथ बोले जाएँ तो सब पहुँच जाएगा। यदि अपने मन में जुदाई नहीं है तो कुछ भी अलग है ही नहीं।

अत: ये तीनों मंदिर इकट्ठे हो जाएँ तो हिन्दुस्तान में से मतार्थ चला जाएगा और शांति रहेगी! मैं इस मार्ग वाला हूँ और वे दूसरे मार्गी हैं, वह मतार्थ है। वहाँ पर लोगों को शांति प्राप्त नहीं होगी। एक पक्ष में पड़ा हुआ क्या कभी सुखी हो सकता है?

शक्करकंद को भठ्ठी में डाला जाए तो वह कितनी तरफ से सिकेगा? चारों तरफ से। इसी तरह ये लोग चारों तरफ से जल रहे हैं। तू अहमदाबाद में, मुबंई में जा तो सही! यहाँ खंभात में तो कम जलन है। यहाँ मोह बाज़ार का बल ज़रा कम है, इसलिए कम जलता है। वहाँ पर मोह बाज़ार का बल देख तो सही! मछली की तरह लोग तड़प रहे हैं, करोड़ों रुपये होने के बावजूद भी! इसलिए यह उपाय है। आपको इसमें कोई दिक्कत लगती है? आप भी इसमें अपना मत दोगे न?अपना राजीपा दोगे न?

प्रश्नकर्ता : हाँ। अब सीमंधर स्वामी के साथ कृष्ण भगवान व शिव भगवान की भी स्थापना की हैं! सीमंधर स्वामी तो वीतराग माने जाते हैं न?

दादाश्री : हाँ। वीतराग ही माने जाते हैं और वे जो हैं, वे शलाका पुरुष हैं सीमंधर स्वामी तो हाज़िर हैं। उनका लाभ तो देखो! उनका लाभ तो सारा संसार ले सकता है। सभी उनका लाभ लेंगे और कृष्ण भगवान तो वासुदेव, नारायण कहलाते हैं। वे नर में से नारायण हुए थे। वे तिरसठ शलाका पुरुषों में माने जाते हैं। और जो भी शलाका में आ गए न, उन सभी का तीर्थंकर बनना पक्का है। और फिर आने वाली चौबीसी में वे तीर्थंकर बनेंगे। वे भावी तीर्थंकर हैं। इसलिए उनके दर्शन करने चाहिए।

तीन प्रकार के तीर्थंकर होते हैं। एक भूतकाल के तीर्थंकर, एक वर्तमान काल के तीर्थंकर और एक भविष्य काल के तीर्थंकर! इनमें भूतकाल के तो हो चुके हैं। उन्हें याद करने से हमें पुण्यफल मिलेगा। उसके अलावा अभी जिसका शासन है न, उनकी आज्ञा में रहने से धर्म उत्पन्न होता है। वह मोक्ष की ओर ले जाता है!

लेकिन यदि वर्तमान तीर्थंकर को याद किया जाए तब उसकी तो बात ही अलग है! वर्तमान की ही कीमत है सारी, नकद रुपये की कीमत है। जो बाद में आएँगे वे रुपये भावी! और जो गए, वे तो गए! अत: नकद बात चाहिए हमें! इसलिए नकद पहचान करवा देता हूँ न! और ये सारी बातें भी नकद हैं। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! नकद चाहिए, उधार नहीं चलेगा। और चौबीस तीर्थंकरों को भी हम नमस्कार करते हैं न!

संयति पुरुष, चौबीस तीर्थंकरों को क्या कहते थे? अतीत तीर्थंकर, कहते थे अर्थात् जो भूतकाल में हो चुके हैं, वे। वर्तमान तीर्थंकरों को खोज निकालो। भूतकाल के तीर्थंकरों की भक्ति से अपनी संसारिक प्रगति होगी लेकिन मोक्ष फल प्राप्त नहीं होगा। मोक्ष फल तो आज जो हाज़िर हैं, वे ही दे सकते हैं।

ये सीमंधर स्वामी वर्तमान तीर्थंकर हैं। उनके लिए तो हिन्दुस्तान में किसी भी जीव को राग-द्वेष नहीं हैं।

त्रिमंदिर, यात्रा का बहुत बड़ा स्थल

यहाँ पर इन सभी धर्मों का संकलन किया जाता है और यह यात्रा का एक बहुत बड़ा स्थान बनेगा और उससे लोगों का कल्याण होगा। इन तीन मंदिरों में जब आप मूर्तियाँ देखोगे तब आपको भव्यता महसूस होगी।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप कृष्ण भगवान की मूर्ति, शिव भगवान की मूर्ति और सीमंधर स्वामी की मूर्ति को एक साथ रखने वाले हैं। दूसरे मंदिर में इस तरह से रखी हैं। तो आपने ऐसा क्यों डिसाइड किया कि इन तीनों को एक साथ रखना है, आपको क्या ऐसा कोई मेसेज आया था? आपने ऐसा कैसे तय किया?

दादाश्री : वह मेसेज जब उजागर होगा तब उस मेसेज का पता चलेगा। वहाँ कृष्ण भगवान, उनके साथ बाला जी, श्री नाथ जी, इस तरफ शिव, गणपति, हनुमान जी, अंबा माता जी, भद्रकाली माता, सीमंधर स्वामी, महावीर भगवान, फिर पार्श्वनाथ भगवान, फिर अजीतनाथ भगवान, ऋषभदेव भगवान, जब वे सब दिखाई देंगे तब पता चलेगा कि यह अद्भुत है!

प्रश्नकर्ता : यानी कि क्या आपके भीतर ऐसा कोई मेसेज आया था कि इस तरह से मंदिर बनाना है।

दादाश्री : वह सब, वह सब तो उस दिन देख लेना। बहुत गहरे मत उतरना। वर्ना बुद्धि सारी रात उसका वैसे गुणाकार करेगी और इसका ऐसे गुणाकार करेगी, रात भर गुणाकार करती...

बुद्धि हमेशा भेद डालती है, यह हमारा और यह आपका। मतभेद उत्पन्न करती है और पक्षपात करती है। ऐसा है न, ये तीर्थंकर भगवान सीमंधर स्वामी अभी हाज़िर हैं, ये वर्तमान तीर्थंकर हैं। इसलिए इनके दर्शन करने चाहिए, कृष्ण भगवान हाज़िर हैं और शिव तो हमेशा हाज़िर ही रहते हैं। अत: उनके दर्शन करने चाहिए। इससे लोगों के जो मतार्थ हैं, वे छूट जाएँगे।

मंदिर का मतलब कल्याण के लिए संज्ञा

इन मंदिरों के लिए, यह सब सारी संज्ञा हुई इसीलिए बने हैं। हमारी संज्ञा जगत् कल्याण के लिए है।

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी के मंदिर और जगहें पर हैं न, फिर नया बनाने की क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : और जगहों पर जो सीमंधर स्वामी के मंदिर हैं न, वे सभी लोगों को एक्सेप्ट नहीं होते। वीतराग, सभी लोगों को एक्सेप्ट होने चाहिए। पक्षपाती नहीं होने चाहिए। अत: यह जो सीमंधर स्वामी का मंदिर बनाया जा रहा है, उसमें चार मूर्तियाँ भूतकाल के तीर्थंकरों की रहेंगी। पहले और दूसरे, ऋषभदेव भगवान और अजितनाथ। और तेईसवें और चौबीसवें, पार्श्वनाथ और महावीर। और सीमंधर स्वामी की बड़ी मूर्ति

मेहसाणा के मंदिर जैसी, बारह फुट की। और साथ में हैं, कृष्ण वासुदेव का मंदिर और इस तरफ शिवलिंग।

यहाँ नहीं मिलेगा, पुद्‌गल का स्वामीपना

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी भगवान जो विराजमान हैं, उनके बारे में ऐसी कोई बात बताइए, कि हमारे मन में उनके प्रति श्रद्धा जाग जाए, कुछ प्रेरणा मिले।

दादाश्री : वे वर्तमान 'तीर्थंकर' हैं। 'तीर्थंकर' यानी क्या? कि जिनमें पूरे *पुद्‌गल* (जो पुरण और गलन होता है) का स्वामीपना (स्वामित्व) ही नहीं होता। *पुद्‌गल* का स्वामीपना ही नहीं होता और अलगपन ही होता है। वे यही सब देखते रहते हैं कि *पुद्‌गल* क्या कर रहा है और वह भी केवलज्ञान स्वरूप से, उनमें पूर्ण रूप से एब्सल्यूट जागृति रहती है। कैसी?

प्रश्नकर्ता : एब्सल्यूट।

दादाश्री : एब्सल्यूट। जागृति के अलावा कुछ भी नहीं। केवलज्ञान और कोई चीज़ नहीं है, सिर्फ संपूर्ण जागृति है! संपूर्ण जागृति, सभी कुछ देख सकते हैं। अब, देख सकते हैं मतलब लोग क्या समझते हैं कि आँखों से दिखाई दें, वैसा देखते होंगे।

जो हाज़िर हैं, वे नकद फल देते हैं

ये मंदिर इसलिए हैं कि जगत् सीमंधर स्वामी को पहचान सके। 'सीमंधर स्वामी कौन हैं', उन्हें पहचान सके। जब हर एक घर में सीमंधर स्वामी की फोटो की पूजा होगी और आरतियाँ होंगी और हर जगह सीमंधर स्वामी के मंदिर बनेंगे, तब दुनिया का नक्शा कुछ और ही होगा! सीमंधर स्वामी के मंदिर बनने चाहिए तो उससे इस देश का बहुत भला होगा!

प्रश्नकर्ता : भला कैसे होगा?

दादाश्री : इसलिए क्योंकि वर्तमान तीर्थंकर हैं। वर्तमान तीर्थंकर के परमाणु ब्रह्मांड में घूमते हैं। वर्तमान तीर्थंकर से बहुत लाभ होता है।

सीमंधर स्वामी जो वर्तमान तीर्थंकर हैं, उन्हें मूर्ति के रूप में पूजें। ऐसा मानो न, कि यदि भगवान महावीर होते, भगवान महावीर के समय में हम होते और ऐसा होता कि वे विहार करते-करते इस तरफ नहीं आ पाते और आप वहाँ उनके पास नहीं जा पाते, तो अगर आप यहाँ 'महावीर, महावीर' करते तो आपको प्रत्यक्ष के समान ही लाभ होता न! लाभ होता या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ। मैं घर बैठकर सीमंधर स्वामी को याद करूँ और मंदिर जाकर याद करूँ, उसमें फर्क है?

दादाश्री : फर्क पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि मंदिर वाले भगवान में प्रतिष्ठा की हुई है, प्राण प्रतिष्ठा की है, इसलिए?

दादाश्री : प्रतिष्ठा की है और वहाँ पर देवताओं का रक्षण बहुत अधिक रहता है न! इसलिए वहाँ ऐसा वातावरण रहता है, जिससे वहाँ ज़्यादा असर होता है! जैसे तुम दादाजी का मन में स्मरण करो और यहाँ पर करो तो, उसमें तो बहुत फर्क पड़ता है न?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आप तो जीवंत हैं।

दादाश्री : जितने जीवंत ये दादाजी हैं, उतने ही जीवंत वे भी हैं। अज्ञानियों के लिए ये दादाजी

जीवंत हैं और ज्ञानी के लिए तो वे भी उतने ही जीवंत हैं। क्योंकि उनका जो भाग दृश्यमान है, वह पूरा मूर्ति ही है। मूर्ति के अलावा और कुछ भी नहीं है। पाँच इन्द्रियगम्य है, उसमें अमूर्त नाम मात्र को भी नहीं है। वह सब मूर्त ही है। उसमें और इस मूर्ति में फर्क नहीं है, डिफरन्स नहीं है। लेकिन इस मूर्ति में ज्ञानी द्वारा प्रतिष्ठा हुई है और यह जीवित भगवान की मूर्ति हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यहाँ पर आप में अमूर्त हैं और वहाँ मूर्ति में अमूर्त नहीं है, ऐसा मानते हैं न?

दादाश्री : वहाँ अमूर्त नहीं है लेकिन मूर्ति में उनकी प्राण प्रतिष्ठा की हुई होती है। वह तो जैसा प्रतिष्ठा का बल! ज्ञानी द्वारा हुई इस प्रतिष्ठा की तो बात ही अलग है न! प्रकट ज्ञानी की बात ही अलग है न! यदि प्रकट ज्ञानी होते, तो क्या से क्या हो जाता।

प्रश्नकर्ता : और प्रकट ज्ञानी तो होते ही नहीं हैं। बहुत समय तक तो...

दादाश्री : और यदि वे न हों, तो भूतकालीन तीर्थंकर, अपने चौबीस तीर्थंकर तो हैं ही न!

हिन्दुस्तान में यदि घर-घर में सीमंधर स्वामी की फोटो होगी तो काम ही हो जाएगा क्योंकि वे सदेह हैं। हमारी फोटो नहीं होगी तो चलेगा लेकिन उनकी तो रखना ही। लोग यदि बिना पहचाने भी वैसे ही उनके दर्शन करेंगे, तब भी काम हो जाएगा। सीमंधर स्वामी के ये चित्रपट बहुत अच्छे निकाले हैं और जब ये हर जगह पहुँच जाएँगे। वैष्णव, जैन, वगैरह सभी के घरों में पहुँच जाएँगे तब काम हो जाएगा। क्योंकि वे हाज़िर हैं, नकद फल देते हैं!

अरिहंत को पहचानने के लिए हैं सभी देरासर

प्रश्नकर्ता : क्या यहाँ से सीमंधर स्वामी के दर्शन हो सकते हैं?

दादाश्री : आपको नहीं हो पाएँगे। उसके लिए माध्यम (मीडियम) चाहिए न? मीडियम दादा भगवान के थ्रू हो सकते हैं। अगर सीमंधर स्वामी का मंदिर बनाएँगे तो हो सकेंगे। क्योंकि वे जीवित तीर्थंकर हैं, वे वर्तमान तीर्थंकर हैं। यदि उनका देरासर बनाएँगे तो उनके सीधे दर्शन होंगे। बनवाना है मंदिर? उतने, करोड़ों रुपये तो होंगे नहीं न, आपके पास? मंदिर बनाएँ तो कैसे बनाएँ?

प्रश्नकर्ता : वह तो पहले कमाएँगे फिर बनाएँगे, ऐसा कहते हैं।

दादाश्री : कमाकर बनवाएँगे तो अच्छा है। यदि पूरा मंदिर नहीं बना सको तो थोड़ा बनवाना कि भाई, इन सीढ़ियों का खर्च मेरा।

मेरा प्रॉपोगेन्डा यही है कि आप तीर्थंकरों को जानो, 'अरिहंत कौन हैं?!' उन्हें जानो तो आपके दु:ख कम हो जाएँगे। अरिहंत ही इस दुनिया के रोग मिटाते हैं, सिद्ध नहीं मिटाते।

प्रश्नकर्ता : अरिहंत ही उपकारी हैं।

दादाश्री : या फिर मेरे जैसे ज्ञानी पुरुष उपकारी हैं। इस संसार में अन्य कोई उपकारी नहीं हैं। अत: इन अरिहंत को पहचानने के लिए तो बड़ा देरासर बन रहा है।

अरूपी को 'अरूपी' के दर्शन

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने सीमंधर स्वामी को देखा है?

दादाश्री : उन्हें देखा है लेकिन सब की

अपनी-अपनी भाषा... के अनुसार, आपकी भाषा अलग है, ये लोग जो भाषा समझते हैं, वह अलग है। वे यों समझते हैं कि आँखें खोलकर देखा होगा! ऐसा-वैसा कुछ नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आपने किस तरह से देखा था।

दादाश्री : अरूपी ने, अरूपी को देखा है, यहाँ से।

प्रश्नकर्ता : अरूपी को, अरूपी ने देखा?

दादाश्री : उस अरूपी को देखा। कैसे देखा? उसे तो खुद ज्ञानी ही जान सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो हमें ज़रा बताइए।

दादाश्री : अभी तो आपको अनुभव से ही समझना चाहिए कि भीतर आत्मा है, मैं आत्मा हूँ। अभी आपको वह वेदन थोड़ा-थोड़ा समझ में आएगा। तो ऐसा करते-करते एक दिन समझ में आ जाएगा। सारी वस्तुएँ अरूपी हैं न।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् सीमंधर स्वामी अरूपी हैं?

दादाश्री : आत्मा भी अरूपी है और सीमंधर स्वामी खुद मूर्ति रूप में हैं लेकिन यहाँ अंदर अरूपी है न, खुद तो मूर्ति हैं, शरीर है। लेकिन उस शरीर को देखकर क्या करना है?

प्रश्नकर्ता : क्या आपने उस शरीर को देखा है?

दादाश्री : इन सभी बातों में गहरे उतरने जैसा नहीं है। लोग तो अलग-अलग तरह की कल्पनाएँ करते हैं, उसी तरह ये कल्पनाएँ भी करते रहते हैं। उसमें बहुत गहरे नहीं उतरना है। सिर्फ इतना ही पूछ लेना है, हमारा संबंध है या नहीं? उस संबंध की वजह से ही यह सब काम चल रहा है। उनके हेड ऑफिस से हमारा संबंध है।

प्रश्नकर्ता : अतः दादा, यह बुद्धि सवाल करती है, कि सवा लाख साल तक इंसान कैसे रह सकता है!?

दादाश्री : लेकिन उस बुद्धि से कहना कि 'बैठ जा बहन, हम से कुछ मत पूछ।' सवा लाख साल, देखो न! अभी भी वे लाख साल जीने वाले हैं। वह बुद्धि उसे भी कैसे एक्सेप्ट करेगी!

प्रश्नकर्ता : नहीं करती इसीलिए तो पूछ रहा हूँ दादा।

दादाश्री : लेकिन उससे ऐसा कहना कि 'चुप बैठ जा। दादा हैं या नहीं, वह देख ले।'

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो हैं, दादा इसे मैंने चुप रहने का बहुत कहा, फिर मैंने सोचा कि एक बार पूछ ही लेता हूँ।

दादाश्री : नहीं! जब हद से बाहर हो जाए तब उससे कहना कि 'चुप बैठ', कहना, ये दादा हैं न।

तीर्थंकर के दर्शन, स्वाभाविक भाव से

प्रश्नकर्ता : आप सीमंधर स्वामी के दर्शन करने जाते हो, तो वे जैसे फोटो में दिखाई देते हैं, वैसे ही हैं, या उससे अलग हैं?

दादाश्री : यह जो फोटो देखते हो न, इसमें और उनमें अंतर है। लेकिन फोटो में अंतर नहीं देखना है, हमें मूल चीज़ ही देखनी है। फोटो में अंतर होता है। और हमें फोटो के दर्शन नहीं

हुए, हमें तो उनके खुद के स्वाभाविक भाव के दर्शन हुए। हमें तो तीर्थंकर के दर्शन करने हैं। जो भीतर बैठे हैं, उनके! इसमें हम ऐसा समझेंगे कि ये जो भगवान दिखाई देते हैं, वे केवलज्ञानी हैं। भीतर क्या है? तब कहें, 'केवलज्ञान', बस, शॉर्ट में इतना ही समझना है।

ज्ञानी वहाँ जा सकते हैं, लेकिन सशरीर नहीं

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी वहाँ पर हैं। आप तो रोज़ दर्शन करने जाते हैं तो वह किस तरह? वह हमें समझाइए।

दादाश्री : हम जाते हैं। लेकिन हम रोज़ दर्शन करने नहीं जा सकते। हमें, ज्ञानी पुरुष को यहाँ से (कंधे से) एक लाइट वाला प्रकाश निकलता है और निकलकर जहाँ तीर्थंकर हैं, वहाँ जाकर प्रश्न का समाधान लेकर फिर वापस आ जाता है। जब कभी समझ में कुछ अंतर आ जाए, समझने में कुछ भूल हो जाए, तब पूछकर आता है। बाकी, हम सदेह जा नहीं सकते, महाविदेह क्षेत्र ऐसा नहीं है!

हमारा सीमंधर स्वामी के साथ तार जुड़ा हुआ है। हम सभी प्रश्न वहाँ पूछते हैं और उन सभी के उत्तर मिल जाते हैं। आज तक हम से लाखों प्रश्न पूछे गए होंगे और हमने उन सभी के उत्तर दिए होंगे, लेकिन वह सब स्वतंत्र रूप से नहीं है, सब के जवाब हमें वहाँ से आए थे। सभी उत्तर नहीं दिए जा सकते न! जवाब देना क्या कोई आसान बात है? एक भी व्यक्ति, पाँच जवाब भी नहीं दे सकता! जवाब देने लगे, उतनी देर में तो वाद-विवाद शुरू हो जाएगा लेकिन यह तो एक्ज़ेक्ट जवाब आते हैं। इसलिए सीमंधर स्वामी की भजना करते हैं न!

मूर्ति के नहीं, प्रत्यक्ष के ही दर्शन

प्रश्नकर्ता : दादा, अपने यहाँ यह जो सीमंधर स्वामी का मंदिर बन रहा है, वहाँ मूर्ति होगी। अब, महात्माओं को उस मूर्ति के दर्शन, किस तरह से करने हैं?

दादाश्री : किस तरह का मतलब?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् आपने ज्ञान से तो भीतर अमूर्त के दर्शन करवा दिए। अब निश्चय से तो हम अमूर्त हैं न! अब, ये जो मूर्ति के दर्शन करने हैं। वह दर्शन, जैसे ये दूसरे सभी सामान्य लोग दर्शन करते हैं, उसी तरह से दर्शन करने हैं या किसी और तरीके से?

दादाश्री : नहीं। से सामान्य लोग दर्शन करते हैं, उनमें तो सामान्य भाव ही रहता है न। उनमें सामान्य भाव ही रहेगा। उन्हें जागृति नहीं रहेगी। और मेरे, सभी लोग जब मेरी फोटो के दर्शन करते हैं तब वे किस भाव से करते होंगे?

प्रश्नकर्ता : ऐसा समझकर ही दर्शन करेंगे न, कि दादा हाज़िर हैं।

दादाश्री : ये भी हाज़िर हैं। और कुछ नहीं। ये तो हाज़िर ही हैं। इसे मूर्ति नहीं कहा जाएगा, मूर्ति कब कहा जाता है? जब इंसान यहाँ से चला जाए, उसके बाद उसे मूर्ति कहते हैं। इसे मूर्ति नहीं कहा जाएगा। मेरे जाने के बाद मेरी फोटो को मूर्ति कहा जा सकता है। जबकि ये तो जाएँगे ही नहीं न! ये तो अभी कितने ही समय तक नहीं जाएँगे। अत: इन्हें तो मूर्ति कहने का सवाल ही नहीं उठता न! ये तो बहुत समय तक रहेंगे न! अत: इनका प्रत्यक्षपना जाएगा ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : प्रत्यक्षपना अर्थात् प्रत्यक्ष के ही दर्शन करते हैं।

दादाश्री : अर्थात् अपने लिए तो प्रत्यक्ष ही हैं ये! प्रत्यक्ष की भी मूर्ति ही होती है, ऐसी ही। जैसी वह मूर्ति है न वैसी ही मूर्ति होती है। लेकिन अपने मन में ऐसा भाव रहता है कि नहीं, ये वही हैं। वे तो अंदर, अलग ही हैं।

वास्तविक दर्शन का तरीका

भगवान के मंदिर में या जिनालय में जाकर, सही तरीके से दर्शन करने की इच्छा हो तो, मैं तुम्हें दर्शन करने का सही तरीका सिखाऊँ। बोलो! है किसी की इच्छा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, है, सिखाइए, दादाजी। कल से ही उस अनुसार दर्शन करने जाएँगे।

दादाश्री : भगवान के मंदिर में जाकर कहना कि, ''हे वीतराग भगवान! आप मेरे भीतर ही बैठे हैं, लेकिन मैं उसे पहचान नहीं पाया हूँ। इसलिए आपके दर्शन कर रहा हूँ। यह मुझे 'ज्ञानीपुरुष' दादा भगवान ने सिखाया है। इसलिए इस प्रकार से आपके दर्शन कर रहा हूँ। आप ऐसी कृपा करें तो कि मुझे मेरी खुद की पहचान हो।'' जहाँ जाओ वहाँ इस प्रकार से दर्शन करना। यह तो अलग-अलग नाम दिए हैं। 'रिलेटिवली' अलग-अलग हैं, 'रियली' सभी भगवान एक ही हैं।

मंदिर में जाने के लिए निकले तब धर्म के विचार नहीं करते! दुकान के विचार करते हैं। कई लोगों को तो रोज़ मंदिर जाने की आदत पड़ी होती है। अरे, आदत पड़ी है, क्या इसलिए तू भगवान के दर्शन करता है? भगवान के दर्शन तो रोज़ नए-नए ही लगने चाहिए न और दर्शन करने जाते समय भीतर उल्लास 'फ्रेश' ही रहना चाहिए।

उपयोग पूर्वक दर्शन करने से मूर्ति करती है बातें

कोई उपयोग पूर्वक दर्शन करने जाता ही नहीं। वर्ना मूर्ति तो बोलेगी ही। यह टेपरिकॉर्ड बोलता है, फिर मूर्ति क्यों नहीं बोलेगी? लेकिन यह तो, लोगों को आदत पड़ गई है इसलिए दर्शन करने जाते हैं। यदि उपयोग पूर्वक दर्शन करेंगे तो मूर्ति बोले बगैर रहेगी ही नहीं। जैसे कि राजा के दर्शन करने जाते हैं, तो पहले से कितनी तैयारी करके ही दर्शन करने जाते हैं न। मूर्ति के दर्शन करने की तो आदत ही पड़ गई है, इसीलिए जाते हैं। हम जब मूर्ति के दर्शन करने जाते हैं न, तब मूर्ति हमारे साथ बातें करेगी ही।

दर्शन, बुद्धि से परे है

प्रश्नकर्ता : दादा जब सीमंधर स्वामी की भक्ति करते हैं तो उनके साथ जो तार जॉइन्ट हुआ है, वह किस प्रकार का तार है? दादा वह भक्ति किस प्रकार से करते हैं?

दादाश्री : उसका कोई तरीका नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : वह कैसा दर्शन होता है?

दादाश्री : दर्शन, बुद्धि से परे की चीज़ है। फिर उसकी बात ही कहाँ? बातें करने का कोई अर्थ ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह क्या है? थोड़ा समझ में तो आए न, थोड़ा सा...

दादाश्री : नहीं। वह बुद्धि से परे है, अतः वह समझ में नहीं आ सकता। उसका कोई अर्थ ही नहीं है न! वह तो हमारे थ्रू करोगे तो चलेगा।

प्रश्नकर्ता : नहीं। यदि उसका ज़रा स्पष्टीकरण हो जाए तो पता चले।

दादाश्री : उसका स्पष्टीकरण इससे ज़्यादा नहीं हो सकता। वह बुद्धि से परे है अत: उसका स्पष्टीकरण किसी काम का ही नहीं है न। वह अदृश्य चीज़ है। अदृश्य, जो अज्ञेय चीज़ है, उसका कोई अर्थ ही नहीं है न।

जहाँ आरती होती है वहाँ भगवान हाज़िर होते हैं

प्रश्नकर्ता : अपने मंदिर में आरती करने का क्या प्रयोजन है?

दादाश्री : इस समय जो भगवान ब्रह्मांड में हाज़िर हैं, ये लोग उनकी आरती करते हैं, वह 'दादा भगवान' थ्रू करते हैं और मैं वह आरती उन तक पहुँचा देता हूँ। मैं भी उनकी आरती करता हूँ। डेढ़ लाख साल से भगवान हाज़िर हैं, उन्हें पहुँचा देता हूँ।

आरती में सभी देवी-देवता हाज़िर रहते हैं। ज्ञानी पुरुष की आरती सीमंधर स्वामी को ठेठ तक पहुँचती है। देवी-देवता क्या कहते हैं कि जहाँ परमहंस की सभा हो, वहाँ हम हाज़िर रहते हैं। अपनी यह आरती भले ही किसी भी मंदिर में गाओ तो भगवान को हाज़िर होना ही पड़ता है।

ब्रह्ममुहूर्त के दर्शन, तुरंत ही पहुँचे

सुबह साढ़े चार से साढ़े छ:, वह तो ब्रह्ममुहूर्त कहलाता है। सब से उच्च मुहूर्त। उस समय जिसने ज्ञानी पुरुष का स्मरण किया, तीर्थंकरों का स्मरण किया, शासन देवी-देवताओं का स्मरण किया, तो उन सभी का वह सब पहले स्वीकार हो जाता है! क्योंकि बाद में लोग बढ़ जाते हैं न! एक आया, फिर दूसरा आया। फिर भीड़ होने लगती है न! सात बजे से भीड़ होने लगती है। फिर बारह बजे ज़बरदस्त भीड़ हो जाती है। अत: जो सब से पहले जाकर खड़ा रहे, उसे भगवान के 'फ्रेश' दर्शन होते हैं। 'दादा भगवान की साक्षी में सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ' बोलते ही तुरंत वहाँ सीमंधर स्वामी को पहुँच जाते हैं। उस समय वहाँ कोई भीड़ नहीं होती। बाद में फिर भीड़ में भगवान भी क्या करें? इसलिए साढ़े चार से साढ़े छ: तो अपूर्व काल कहलाता है! युवा लोगों को तो यह मौका छोड़ना ही नहीं चाहिए।

स्वामी का करोगे, वहाँ आपका आ ही जाएगा

यहाँ आप सीमंधर स्वामी के लिए जितना करोगे, उतने में आपका सब आ जाएगा। उतना बहुत हो गया। उसमें ऐसा नहीं है कि यह कम है। आपने जो सोचा हो (दान देने के लिए) वैसा करो तो सबकुछ हो गया। फिर उससे ज़्यादा करने की ज़रूरत नहीं है। फिर अस्पताल बनाओ या और कुछ बनाओ। वह सब अलग रास्ते पर जाता है। वह भी पुण्य है लेकिन वह संसार में ही रखता है जबकि यह तो पुण्यानुबंधी पुण्य है, जो मोक्ष में जाने में हेल्प करता है!

मंदिर के लिए यदि लक्ष्मी दोगे तो वह भी इस ज्ञान के समान ही है क्योंकि वह सीमंधर स्वामी के लिए है। किताबों के लिए दान देने की बजाए इसका महत्व अधिक है। हाँ, सीमंधर स्वामी के लिए जो कुछ भी किया जाए, उसकी तो बात ही अलग है। उसकी तो कीमत ही नहीं लगाई जा सकती। चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियाँ तो हैं लेकिन वे तीर्थंकर चले गए। जबकि ये तो हाज़िर तीर्थंकर कहलाते हैं। अपने यहाँ शुरू

से ही हाज़िर तीर्थंकर की मूर्ति या मंदिर नहीं बनाते हैं। अपने भारत देश में जब पार्श्वनाथ भगवान हाज़िर थे, उस समय उनका मंदिर बना था।

प्रश्नकर्ता : अत: जब तक उनकी देह है और वे विचरते हैं तब तक वे हेल्प करते हैं?

दादाश्री : अभी जितनी आयु बाकी है उतनी पूर्ण होने तक लोगों को लाभ मिलेगा और हम प्रतिष्ठा भी इतनी अच्छी करेंगे। यानी कि लोगों का कल्याण होना है।

प्रश्नकर्ता : लाभ होता है अर्थात् क्या होता है? इन जीवों में जागृति उत्पन्न होती है?

दादाश्री : धर्म की राह पर आ जाते हैं। सत् धर्म, मोक्ष का मार्ग मिल जाता है।

जागृति वगैरह सब बढ़ता है। सर्वेच्च चीज़ें मिलती रहती हैं लेकिन हमारी भावना है कि हिन्दुस्तान इस स्थिति में नहीं रहना चाहिए। लोग इस स्थिति में नहीं रहने चाहिए।

यदि पूजे जाने की कामना छूटेगी तो हल आएगा

हिन्दुस्तान में सभी लोगों ने मुझ से कहा कि हमारे मंदिर में आपकी मूर्ति रखनी है। मैंने उनसे कहा कि 'नहीं, मूर्ति मत रखना। यदि मैं मूर्ति रखवाऊँगा तो बाद वालों को मौका मिल जाएगा। अत: फिर वे अपनी भी (मूर्ति) रखवाएँगे। फिर दुबारा कोई अपनी रखवाएगा, उस तरह से।

इसलिए मैं यहीं से काट दूँ तो कोई झंझट ही नहीं रहेगी न! फिर कोई लालच ही नहीं रहेगा न! फिर वे कैसे अपनी मूर्ति रखवाएँगे?

प्रश्नकर्ता : मूल ध्येय ही चूक जाएँगे।

दादाश्री : इसलिए मेरी मूर्ति रखने की ज़रूरत नहीं है। जब देखो तब मैं तो मूर्त ही हूँ। यह मूर्तियाँ तो सभी पूर्व पुरुषों की रखी हुई हैं। दो तरह के लोगों की मूर्तियाँ रखी हैं। सच्चे पुरुष, मूल पुरुष उनकी मूर्ति लोगों ने रखी हैं। और मेरे बाद तो फिर क्या होगा? फिर तो प्रथा ही चल निकलेगी कि मेरे बाद जो भी आएँगे न, वे फिर दादा की मूर्ति रखेंगे। अत: मैंने बताया है कि यदि मेरी मूर्ति रखनी हो, तो ऐसी रखना कि मैं सीमंधर स्वामी के सामने उन्हें यों नमस्कार कर रहा हूँ, बैठा हूँ, वैसी मूर्ति रखना।

प्रश्नकर्ता : यदि मूर्ति रखनी ही पड़े, ऐसा हो तो इस तरह से तो रख सकते हैं न?

दादाश्री : तो फिर उसमें कोई हर्ज नहीं। अत: फिर लोगों को ऐसा लगेगा कि दादा को पूजाने की कामना नहीं है, पूजने की कामना है। ये सीमंधर स्वामी पूजने के लिए हैं और उनकी पूजा करनी है, ऐसा कह रहे हैं!

मेरी पूजा बहुत-बहुत हो चुकी है। अनंत जन्मों से पूजा करवा-करवा कर मेरा मन भर गया है! अब, मुझे किसी भी प्रकार की भीख नहीं रही। वह तो एक प्रकार की मान की भीख है, पूजाने की कामना। जब इन सभी कामनाओं को छोड़ देंगे तभी निबेड़ा आएगा।

भावना, भविष्य की प्रजा को उबारने की

सीमंधर स्वामी जीवित तीर्थंकर हैं इसलिए उनकी मूर्ति की हिन्दुस्तान में खासतौर पर ज़रूरत है। सीमंधर स्वामी के अपने मंदिर में, त्रिमंदिर में जो मूर्तियाँ हैं, वे इतनी ज़्यादा हेल्पफुल हैं, इतनी उत्तम चीज़ है।

इस काल में यदि प्रकट ज्ञानी पुरुष न हों तो सेकन्ड नंबर पर क्या है? तब कहेंगे, सीमंधर स्वामी के दर्शन, उनकी मूर्ति के।

अत: यह जो सीमंधर स्वामी का मंदिर बनाया जाता है। यह व्यवहार है। यह भविष्य की प्रजा को उबारने के लिए है। और जब तक ये सीमंधर स्वामी खुद हैं तब तक वे हेल्प फुल हैं। और यह तो हम जो करते हैं न, वह तो इट हैपन्स है! 'इट हैपन्स' हो रहा है! अगर सीमंधर स्वामी को भजेंगे तो हिन्दुस्तान में बदलाव होगा, वर्ना बदलाव कैसे होगा?

प्रश्नकर्ता : दादा, अगर अभी देखा जाए तो हिन्दुस्तान में भयंकर कलियुग है।

दादाश्री : वह भले ही रहा! जब तक ये सीमंधर स्वामी खुश हैं, जहाँ पर सारे देवी-देवता खुश हैं, वहाँ फिर क्या बाकी रहेगा?

क्या सभी महात्मा महाविदेह जाएँगे?

प्रश्नकर्ता : तो सभी महात्मा महाविदेह क्षेत्र में जाएँगे न?

दादाश्री : कई लोग यहाँ आने के बाद जाएँगे। एकाध जन्म करके! भीतर लोगों का जो हिसाब है, वह सब दे देना पड़ेगा। बंध पड़ गया हो तो, उसे पूरा करना पड़ेगा। दस-पंद्रह साल का हिसाब चुकाना बाकी होगा तो, वह चुकाने के बाद जाएँगे। बीच में हिसाब तो चुकाना ही पड़ेगा न! यह ज्ञान लेने से पहले हमने ऐसा कोई खराब कर्म बाँध लिया हो, उसका दंड मिलना हो, तो उस दंड को तो भोगना ही पड़ेगा न! उसे भुगत कर मुक्त हो जाओ। एक जन्म का दंड है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद कोई भटक सकता है क्या?

दादाश्री : नहीं भटकता।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद कोई हमेशा के लिए भटक सकता है?

दादाश्री : नहीं। लेकिन ज्ञान प्राप्त नहीं करे और फिर उल्टा ही चले, सभी का उल्टा ही बोलता रहे, तो फिर कोई ठिकाना नहीं!

प्रश्नकर्ता : जितने लोग सीमंधर स्वामी के दर्शन करते हैं, वे सभी फिर मोक्ष में जाएँगे न?

दादाश्री : ऐसा कुछ नहीं है कि उनके दर्शन करने से मोक्ष में जाएगा, उनकी कृपा होना चाहिए। हृदय साफ होने के बाद उनकी कृपा उतरती जाएगी। यह तो, कान में बहुत मीठा लगता है अत: सुनने के लिए यहाँ आते हैं। सुनकर फिर वापस जहाँ थे वहीं के वहीं। उन्हें तो सिर्फ चटनी ही पसंद है। पूरा खाना नहीं खाएँगे, सिर्फ चटनी के लिए ही वहाँ पर बैठे रहेंगे।

प्रश्नकर्ता : तो हम यहाँ से महाविदेह क्षेत्र में जाकर सीमंधर स्वामी के दर्शन करते हैं, तो फिर हमारा मोक्ष होगा या नहीं?

दादाश्री : वह तो होगा ही न! क्योंकि आपने तो यह ज्ञान लिया है न, अत: जब महाविदेह क्षेत्र में पहुँचोगे तब फिर वहाँ संयोग मिल जाएँगे तो सब ठीक हो जाएगा। आपके जो दो-तीन, चार जन्म होने बाकी हैं या फिर हमारी जो आज्ञा दी हैं, उसके फल स्वरूप रहेंगे और ज़बरदस्त पुण्य होगा तो यहाँ से जाते ही बंगला नहीं बनाना पड़ेगा, बंगला वाले के घर ही, बंगला बनकर तैयार होने के बाद ही भाई

का जन्म होगा। पुण्यशाली को कुछ भी मेहनत नहीं करनी पड़ती। मेहनत तो वे बेचारे माँ-बाप ही करते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : अब जिन्होंने 'ज्ञान' नहीं लिया है, उन्हें यदि मोक्ष में जाना हो, सीमंधर स्वामी के दर्शन करने के लिए वहाँ पर पहुँचना हो, तो उन्हें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : कुछ भी नहीं करना है। यदि हमारी आज्ञा का पालन करेगा तो वह आज्ञा ही उसे मोक्ष में ले जाएगी। कुछ भी करने जैसा नहीं है। और यदि आज्ञा का पालन करोगे तो वह संयोग, सीमंधर स्वामी का संयोग मिलेगा ही। उसे ढूँढना भी नहीं पड़ेगा।

ज्ञान लेने के बाद आपका यही जन्म महाविदेह क्षेत्र के लिए ही तैयार हो रहा है। मुझे कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। नैचुरल (कुदरती) नियम ही है।

आज्ञा पालन के परिणाम

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में कैसे जा सकते हैं? पुण्य से?

दादाश्री : हमारी आज्ञा का पालन करने से इस जन्म में पुण्य बंधन हो ही रहा है, वह महाविदेह क्षेत्र में ले जाता है। आज्ञा पालन करने से धर्मध्यान होता है, वह सब फल देगा। जितना हमारी आज्ञा का पालन करता है उतना ही पुण्य बंधन होता है। उसके बाद, उसे भोगने के लिए वहाँ पर तीर्थंकर के पास जाना होगा।

प्रश्नकर्ता : हम सभी महात्माओं का व्यवहार कचरे जैसा है, तो उसे देखकर सीमंधर स्वामी हमें वहाँ रखेंगे क्या?

दादाश्री : उस समय व्यवहार ऐसा नहीं रहेगा। अभी, आप जो हमारी आज्ञा का पालन कर रहे हो, उसका फल उस समय आएगा। और अभी जो कचरा माल है, वह तो मुझ से पूछे बगैर ही भर लिया था, वह निकल रहा है।

प्रश्नकर्ता : दादा, सीमंधर स्वामी को याद करने से, सीमंधर स्वामी के पास ही जाएँगे, ऐसा पक्का है क्या?

दादाश्री : जाना तो पक्का ही है। इसमें नया कुछ नहीं है। लेकिन सतत उनकी याद रहने से और कुछ भी भीतर नहीं घुसेगा। दादा याद रहें या तीर्थंकर याद रहें तो माया घुसेगी ही नहीं! अभी, यहाँ पर माया नहीं आ सकती।

सीमंधर स्वामी भगवान, वे फुल मून

तब अनादि काल से, लाखों जन्म बीत गए। 'नो मून!' अनादिकाल से सभी 'डार्कनेस' में, अज्ञान रूपी अंधेरे में ही जी रहे हैं। (ज्ञान रूपी) उजाला देखा ही नहीं है। मून (चंद्र का प्रकाश) देखा ही नहीं! तो हम जब यह ज्ञान देते हैं, तब वह मून प्रकट होता है। पहले तो वह दूज जैसा उजाला देता है। और जब हम पूर्ण ज्ञान देते हैं तब यह भीतर प्रकट हो जाता है। कितना? दूज के चंद्रमा जितना ही। फिर इस जन्म में हमें पूनम होने तक कर लेना है। फिर दूज से तीज होगी, चौथ होगी, चौथ से पंचमी होगी... और फिर पूनम हो जाएगी तो फिर कम्प्लीट हो गया!

प्रश्नकर्ता : फुल मून इसी जन्म में हो जाएगा न?

दादाश्री : नहीं! इस जन्म में पूर्ण होना संभव नहीं है। लेकिन फिर जो एक जन्म होगा,

वह पूर्ण वैभव वाला होगा। सीमंधर स्वामी के पास ही बैठे रहना है। क्योंकि फुल मून पूर्णिमा नहीं हुई है। फोरटीन्थ (चौदस) है और सीमंधर स्वामी भगवान फुल मून हैं! तब तक इन्ट्रिम गवर्मेन्ट और फिर फुल गवर्मेन्ट! स्वतंत्र! नॉट डिपेन्डेन्ट! इन्डिपेन्डेन्ट!

फिर उससे आगे हमें ज़रूरत नहीं है। अपने कॉलेज में इससे आगे का भाग नहीं है। अपने कॉलेज में अंतिम वर्ष बाकी रह जाता है, अत: व्यर्थ में माथापच्ची क्यों करनी?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, हमें वह अंतिम डिग्री चाहे किसी भी जन्म में दे देना।

दादाश्री : वह डिग्री तो दे ही देनी है। अभी तो अंतिम वर्ष बाकी रहे हैं।

जब सीमंधर स्वामी भगवान के पास जाएँगे न, तब वहाँ पर वह पूरा होगा।

शुद्धात्मा के लक्ष से, महाविदेह क्षेत्र

जिसे यहाँ पर शुद्धात्मा का *लक्ष* (जागृति) मिल गया है, वह यहाँ पर भरत क्षेत्र में रह ही नहीं सकता। जिसे आत्मा का *लक्ष* बैठ चुका है, वह महाविदेह क्षेत्र में पहुँच ही जाएगा, ऐसा नियम है! यहाँ, इस दुषमकाल में रह ही नहीं सकेगा। जिसे यह शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठ गया हैं, वह महाविदेह क्षेत्र में एक जन्म अथवा दो जन्म लेकर, तीर्थंकर के दर्शन करके मोक्ष में चल जाएगा। ऐसा आसान व सरल मार्ग है यह! हमारी आज्ञा में रहना। आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप! समभाव से *निकाल* करना है। वे जो आज्ञाएँ बताई हैं, उनमें जितना रह सको उतना रहो। यदि पूर्ण रूप से रह सके तो भगवान महावीर जैसी दशा में रह सकते हो! आप 'रियल' और 'रिलेटिव' देखते-देखते जाओ, आपका चित्त दूसरी जगह नहीं भटकेगा, लेकिन उस समय मन में से कुछ निकले तो आप उलझन में पड़ जाते हो।

यह ज्ञान प्राप्त होने के बाद यदि हमारी पाँच आज्ञा का पालन करेगा तो यहीं पर भगवान महावीर की तरह रह सकेगा, ऐसा है। हम खुद ही रहते हैं न! जिस रास्ते पर हम चले हैं, वही रास्ता आपको बता दिया है। हमारे भीतर जो *गुंठाणा* (गुणस्थानक) प्रकट हुआ है वही *गुंठाणा* आपका भी हो गया है।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी वाणी, आपकी सरस्वती को हम स्पर्श करते हैं और आपके शुद्ध चेतन की साक्षी में हम सीमंधर स्वामी को नमस्कार पहुँचाते हैं।

दादाश्री : हम जब आपको ज्ञान देते हैं न, तब हम वहाँ पर बैठ जाते हैं। अत: आपके नमस्कार पहुँच ही जाते हैं। जिसे ज्ञान मिला, जो आज्ञा में रहता है, उसका पहुँच ही जाएगा। फिर भले ही आज्ञा कम-ज़्यादा पाली जाए, वह अलग चीज़ है। फिर भी वह आज्ञा पालन करता तो है न? किसी का प्रमाण कुछ कम हो सकता है।

इस ज्ञान के बाद अब, आपको कर्म बंधन नहीं होगा। जो कर्म कर रहा था, वह कर्म करने वाला ही छूट गया। इसलिए कर्म नहीं बंधेंगे। अत: निरंतर संवर ही रहेगा। संवर पूर्वक निर्जरा होती रहेगी। सिर्फ एक जन्म या दो जन्म तक के ही कर्म बंधेंगे। वह भी मेरी आज्ञा पालन की वजह से और उससे तो आपको यहाँ से सीमंधर स्वामी के पास ही जाना पड़ेगा। वह आपको महाविदेह क्षेत्र में ही खींचकर ले जाएगी। क्योंकि जिसके

आद्रध्यान-रौद्रध्यान बंद हो जाते हैं, वह यहाँ पर इस क्षेत्र में रह ही नहीं सकता। उसे महाविदेह क्षेत्र ही खींच लेता है। कोई ले जाने वाला नहीं है, क्षेत्र ही खींच लेता है।

जो आज्ञा पालन करे, उसकी ज़िम्मेदारी हमारी

हमारा सीमंधर स्वामी के साथ संबंध है। हम ने सभी महात्माओं के मोक्ष की ज़िम्मेदारी ली है। जो हमारी आज्ञा का पालन करेगा, उसकी ज़िम्मेदारी हम लेते हैं।

यह ज्ञान पाने के बाद एकावतारी होकर, सीमंधर स्वामी के पास जाकर वहाँ से मोक्ष में चला जाता है। किसी के दो जन्म भी हो सकते हैं लेकिन चार जन्मों से अधिक नहीं होंगे, यदि हमारी आज्ञा का पालन करेगा तो। यहीं पर मोक्ष हो जाएगा। 'यहाँ एक भी चिंता हो तो दावा दायर करना' ऐसा कहते हैं। यह तो वीतराग विज्ञान है। चौबीस तीर्थंकरों का सम्मिलित विज्ञान है।

'त्रिमंदिर' तो अमूर्त का मंदिर

मूर्ति तो अमूर्त का कॉज है, इसलिए मूर्ति के दर्शन अवश्य करने चाहिए।

महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी भगवान विराजमान हैं। उनकी मूर्ति यहाँ पर स्थापित करनी है। यदि जीवंत भगवान की मूर्ति होगी तो वह कितना फल देगी! सीमंधर स्वामी का मंदिर तो अमूर्त का मंदिर है।

उनका चित्र, फोटो या मूर्ति, सभी कुछ काम करेगा। अत: अपने महात्माओं को वहाँ दर्शन ही करते रहना है, उनके सामने बैठे रहना है, आप सीमंधर स्वामी के पास बैठे रहना, यदि उस मूर्ति के पास बैठे रहोगे न, तो भी हेल्प होगी।

मैं भी बैठा रहता हूँ, मुझे तो मोक्ष मिल गया है, फिर भी मैं बैठा रहता हूँ। वर्ना मुझे उनसे क्या काम था? क्योंकि अभी वे मेरे *ऊपरी* हैं। उनके दर्शन करेंगे तभी मोक्ष होगा, वर्ना मोक्ष नहीं होगा।

सीमंधर स्वामी, दादा के भी दादा

हम यहाँ पर आपको दिखाई तो देते हैं लेकिन हम तो सीमंधर स्वामी के पास ही बैठे रहते हैं और आपको वहाँ पर दर्शन करवाते हैं। हमारी उनसे पहचान है, सीमंधर स्वामी हमारे दादा के भी दादा हैं। क्या कहा? दादा के भी दादा हैं। अंतिम चाहिए न! हमें तो जिनका महत्त्व है, उन्हीं की ज़रूरत है।

तो आपको क्या लगता है? क्या ऐसा लगता है कि सीमंधर स्वामी मिलेंगे ही? वहीं पर जाना पड़ेगा। उनके पास ही छुटकारा मिलेगा। उनके अंतिम दर्शन किए कि छुटकारा मिला। ज्ञानी के दर्शन तक तो पहुँच गए लेकिन अब, वे अंतिम दर्शन करने पड़ेंगे तब छुटकारा मिलेगा। अंतिम हस्ताक्षर बाकी है। सारे हस्ताक्षर हो गए हैं। यह अंतिम हस्ताक्षर बाकी है। यदि ज्ञानी के हस्ताक्षर हो जाएँ तो समझना की अब सेफसाइड हो गई। हमेशा के लिए सेफसाइड हो गई। लेकिन यदि छूटना हो तो जब अंतिम हस्ताक्षर करवा लोगे, तभी।

प्रश्नकर्ता : दादा, अब तो हमारा स्टेशन नज़दीक आता जा रहा है।

दादाश्री : हाँ, नज़दीक ही आ रहा है न, सब नज़दीक ही आएगा। हम तो उसी जगह पर रहते हैं, स्टेशन ही नज़दीक आता है! हम तो गाड़ी में उसी जगह पर बैठे रहते हैं लेकिन

स्टेशन नज़दीक आता जाता है। उसी तरह से यह भी आपके नज़दीक आता जाएगा है।

अरिहंत की प्रतिकृति से ही प्राप्ति

आप एक जन्म के बाद वहाँ जा सकते हो। वहाँ उनके शरीर को आप हाथ से छू सकोगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी। हमें चान्स मिलेगा न?

दादाश्री : सब मिलेगा। क्यों नहीं मिलेगा? आप सीमंधर स्वामी के नाम का ही तो रटन करते हो। आप सीमंधर स्वामी को नमस्कार करते हो। वहीं पर तो जाना है हमें, इसलिए हम उनसे कहते हैं कि 'साहब! आप भले ही वहाँ बैठे, हमें नहीं दिखाई देते, लेकिन यहाँ हम आपकी प्रतिकृति बनाकर आपके दर्शन करते रहते हैं।' बारह फुट की मूर्ति रखकर हम उनके दर्शन करते हैं, उनके गुणगान करते हैं। यदि मूर्ति जीवित भगवान की प्रतिकृति हो, तो अच्छा रहता है। जो चले गए उनके हस्ताक्षर काम ही नहीं आते, उनकी प्रतिकृति बनाकर क्या लाभ? ये सीमंधर स्वामी तो काम आते हैं। ये तो अरिहंत भगवान हैं!

प्रश्नकर्ता : ठीक है। अब, जब हम सीमंधर स्वामी के दरबार में पहुँच जाएँगे तब उस समय क्या वहाँ पर यह पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाएगा?

दादाश्री : इस में ऐसा है न, कि दादा में ये जो दर्शन दिखाई देते हैं, वे अंतिम स्टेशन से पहले वाले स्टेशन के दर्शन हैं। कैसा?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : यानी कि गाड़ी वहाँ तक पहुँचा देनी है, फिर उससे आगे नहीं जाएगी। फिर सीमंधर स्वामी के दर्शन हो जाने पर पूर्णाहुति हो जाएगी, बस! उनके दर्शन करने की ही ज़रूरत है। फिर कम्प्लीट मोक्ष की मुहर लग जाएगी। यहाँ पर हम वीज़ा दे दें तभी दर्शन हो सकते हैं, वर्ना नहीं हो सकते।

प्रश्नकर्ता : लेकिन, महाविदेह क्षेत्र में जाने के बाद सीमंधर स्वामी के दर्शन मिलेंगे ही, उसकी क्या गारन्टी है?

दादाश्री : वे तो नियम से ही मिलेंगे। क्योंकि यहीं से उनसे पहचान कर ली है। रोज़ सीमंधर स्वामी के ही गुणगान करते रहते हो। अब मंदिर बनने के बाद रोज़ दर्शन करने कभी-कभी तो जाओगे न? साल भर में... एकाध बार तो दर्शन करने जाओगे न। अत: यहीं से उनसे पहचान कर ली है। और फोटो तो घर पर रखते ही हो न। अत: यदि यहीं से उनसे पहचान हो जाए तो वहाँ पर मिलेंगे ही न! और कोई नहीं मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : फिर भी, दादा की गारन्टी तो है न?

दादाश्री : हाँ। उसकी गारन्टी है! उसकी पूरी गारन्टी है। यह सब तो गारन्टी वाला ही माल है। यदि आप टेढ़े हो जाओगे तो बिगड़ जाएगा। यदि आप सीधे रहोगे, मेरे कहे अनुसार तो कोई बाधा नहीं आएगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि टेढ़े हो जाए तो सीधा कर देना। वह आपकी ज़िम्मेदारी।

दादाश्री : हाँ... हाँ, कर लेंगे ही।

-जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

13 से 15 सितम्बर : नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में तीन दिनों के सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुआ। आसपास के राज्यों में से 600 मुमुक्षु-महात्मा आए थे। इन दो दिनों के सत्संग टॉपिक थे : (1)'प्रार्थना प्राप्त करवाए परमार्थ' (2) 'निंदा व टीका के जोखिम।' पूज्यश्री ने स्थानीय महात्माओं के साथ मॉर्निंग वॉक और सेवार्थी महात्माओं के साथ सत्संग करके सभी को दर्शन का लाभ दिया। 15 सितम्बर को आयोजित ज्ञानविधि में 760 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

17 से 19 सितम्बर : दक्षिण भारत में बेंगलूर में पूज्यश्री का सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम हुआ। कच्छी पाटीदार समाज भवन में कार्यक्रम का आयोजन हुआ था। कई कच्छी पटेल मुमुक्षु भी आत्मज्ञान की अनुभूति के लिए आए थे। अन्य शहरों से लगभग 150 मुमुक्षु व महात्मा आए थे। पहले दिन 'दु:ख दिया जाता है वहाँ प्रतिक्रमण की आवश्यता' टॉपिक पर पूज्यश्री द्वारा प्रश्नोत्तरी सत्संग किया था। ज्ञानविधि में 900 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जिसमें अधिकतर कच्छी पटेल समाज के लोग थे। कुछ कन्नड भाषी मुमुक्षु भी थे। पूज्यश्री ने स्थानीय महात्माओं के साथ मॉर्निंग वॉक किया। सेवार्थी सत्संग और व्यक्तिगत मार्गदर्शन देकर सेवार्थियों की उपस्थिति में प्रसाद लिया। ज्ञानविधि के बाद, अगले दिन आप्तपुत्र द्वारा फॉलो अप सत्संग में 300 महात्मा आए थे।

20 से 23 सितम्बर : दो साल बाद पुणे में सत्संग व ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। महाराष्ट्र के अलग-अलग जिलों से लगभग 1000 से अधिक मुमुक्षुओं और महात्माओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। 'विवेक-विनय, व्यवहार में' और 'नौ कलमें' टॉपिक पर दो दिनों के दौरान मुमुक्षुओं ने पूज्यश्री से कई प्रश्न पूछे, जिसमें ज़्यादातर प्रश्न मराठी भाषा में पूछे गए थे। यहाँ भी पूज्यश्री के साथ मुमुक्षुओं ने मॉर्निंग वॉक, सेवार्थी सत्संग व दर्शन के साथ भोजन का लाभ लिया था। ज्ञानविधि में लगभग 1550 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की अनुभूति की। इनमें से लगभग 100 महात्मा अगले दिन आप्तपुत्र सत्संग में भी आए थे।

26 से 28 सितम्बर : इस साल अपरिणीत बहनों का शिविर सेफ्रोनी, मेहसाणा की बजाय अडालज त्रिमंदिर संकुल में हुआ। पूज्यश्री की उपस्थिति में हुए इस शिविर में 457 बहनों भाग लिया। शिविर में ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण, विषय दोषों को अधिक सूक्ष्मता से समझने के लिए स्पेशल टॉपिक और 'सेवा में सिन्सियारिटी' टॉपिक पर पूज्यश्री के सत्संग हुए। ब्रह्मचर्य को अधिक पुष्टि मिले, इस हेतु से पूज्यश्री की उपस्थिति में एक नए मिशन की शुरुआत हुई जो कि 2020 तक चलेगा। शिविर में पूज्यश्री की उपस्थिति में गरबा, आरती, इन्फॉर्मल, दर्शन वगैरह सेशन में बहनों को बहुत आनंद हुआ और ध्येय मज़बूत करने के लिए बहुत पुष्टि मिली।

29 सितम्बर से 2 अक्तूबर : अडालज त्रिमंदिर संकुल में आयोजित अपरिणीत भाईयों के शिविर में 480 युवा साधकों ने हिस्सा लिया। पहले दिन शाम को ब्रह्मचर्य (पू.) पुस्तक पर पारायण हुआ। दूसरे दिन सुबह 'माने हुए अपमान से होने वाली नेगेटिविटी' टॉपिक पर और शाम को ग्रीन पास वाले साधकों के लिए पूज्यश्री का स्पेशल सत्संग हुआ था। पूज्यश्री ने साधकों की उपस्थिति में डिनर लिया था और सब के साथ साधकों द्वारा प्रस्तुत नाटक देखा था। तीसरे दिन सुबह 'क्या चाहिए? क्या सुखी हुए?' टॉपिक पर सत्संग हुआ था। शाम को नया प्रयोग किया गया। ब्रह्मचर्य से संबंधित दादाश्री की ज्ञानवाणी सुनी गई और पूज्यश्री द्वारा उसका विवेचन किया गया। चौथे दिन अलग-अलग ग्रुप में आप्तपुत्रों के साथ ग्रुप डिस्कशन और शाम को आप्तपुत्र सत्संग हुआ था। इसके अलावा शिविर में चरणविधि, ब्रह्मचर्य डी.वी.डी., और एक टॉपिक पर एक्टिविटी, गरबा, भावना की सामायिक वगैरह आयोजित किए गए। चार दिनों के इस शिविर में साधकों में जागृति और ब्रह्मचर्य की समझ में अभि वृद्धि हुई। पूज्यश्री द्वारा ब्रह्मचर्य सत्संग की नई डी.वी.डी. का विमोचन हुआ।

1 - 2 अक्तूबर : नवरात्रि महोत्सव में अडालज त्रिमंदिर संकुल के ATPL के सेक्टर-4 में आयोजित गरबा में पधार कर पूज्यश्री ने महात्माओं को दर्शन दिए थे। 1 तारीख को दादाई गरबा की सी.डी. के गायक कलाकारों द्वारा लाईव परफोर्मन्स किया गया। 2 तारीख को दादाई गरबा की चार नंबर की नई ओडियो सी.डी. पर सभी महात्माओं ने गरबा किया। पूज्यश्री की उपस्थिति में सभी महात्मा तालियों के साथ आनंद से झूम उठे। गरबा के बाद अंबा माता जी की आरती की गई थी।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उत्तर - पूर्व भारत

धर्मशाला **दिनांक :** 1 दिसम्बर **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9805254559
स्थल : योल केंट, गुरु द्रोणाचार्य नर्सिंग कोलेज, योल केंट तहसील, जिल्ला - धर्मशाला.

जालंधर **दिनांक :** 2 दिसम्बर **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9779233493
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, C/O ईगल प्रकाशन, सेन्ट्रल मिल कंपाउंड, पुराना रेल्वे रोड, दमोरिया पूल के पास.

अमृतसर **दिनांक :** 3 दिसम्बर **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9872298125
स्थल : गोपाल मंदिर, मजीठा रोड़, अमृतसर.

लुधियाना **दिनांक :** 4 दिसम्बर **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9465051163
स्थल : भारत विकास परिषद, चेरिटेबल ट्रस्ट, ब्लोक C, ऋषि नगर, लुधियाणा.

लुधियाना **दिनांक :** 4 दिसम्बर **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9465051163
स्थल : राम मंदिर, गली नं 10, गुरुपाल नगर, ATI कोलेज के पीछे, लुधियाणा.

नवांशहर **दिनांक :** 5 दिसम्बर **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 8288891118
स्थल : विद्यावती भवन, DC कोम्प्लेक्स के पास, चंडीगढ़ रोड़, नवांशहर.

चंडीगढ़ **दिनांक :** 6 दिसम्बर **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9780732237
स्थल : क्लब हाउस, रिवर डेल अपार्टमेंट सोसायटी, AKM रिसोर्ट के पीछे, हाईलेंड मार्ग, जीरकपुर, चंडीगढ़.

चंडीगढ़ **दिनांक :** 7 दिसम्बर **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9780732237
स्थल : गुजरात भवन, प्लाट नंबर-17, सेक्टर-24C, बत्रा सिनेमा के सामने, चंडीगढ़.

गिरिडीह **दिनांक :** 12 दिसम्बर **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9122373306
स्थल : रंजीत रेस्ट हाउस, आम्बेडकर चौक के पास, मैन रोड़, गिरिडीह, जारखंड.

बोकारो **दिनांक :** 12 दिसम्बर **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 7765045788
स्थल : जैन मिलन होळ, जैन मंदिर, सेक्टर 2C मोड़ के पास, सेकटर 2D, बोकारो, जारखंड.

धनबाद **दिनांक :** 11 दिसम्बर **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9431191375
स्थल : स्वामीनारायण मंदिर होळ, कतरास रोड़, धनबाद.

हजारीबाग **दिनांक :** 13 दिसम्बर **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 7033093740
स्थल : रमा देवी सत्संग भवन, मालविया मार्ग, बिहारी दुर्गा मंदिर के पास, हज़ारीबाग.

गढ़वा **दिनांक :** 14 दिसम्बर **समय :** दोपहर 2 से 5 **संपर्क :** 9801362466
स्थल : आदर्श होटल, मझिआंव मोड़, सरस्वती पुल के निकट, गढ़वा(झारखंड).

झाझा **दिनांक :** 16 दिसम्बर **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9801500832
स्थल : ग्राम-अंबा, उत्तरी टोला, पुरानी काली स्थान, झाझा (जमुई), बिहार.

नवादा **दिनांक :** 17 दिसम्बर **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 7654057901
स्थल : आर्य समाज मंदिर, विजय सिनेमा चौक, सोनार पट्टी रोड, नवादा (बिहार).

पटना **दिनांक :** 18 दिसम्बर **समय :** दोपहर 2-30 से 5 **संपर्क :** 7352723132
स्थल : कुर्मी विकास परिषद (कुर्मी भवन), DC-13, सब्जी बाज़ार के पास, कंकरबाग, पटना.

पश्चिम भारत

सातारा **दिनांक :** 9 दिसम्बर **समय :** दोपहर 2 से 4-30 **संपर्क :** 7350998503
स्थल : 929, आदर्श अपार्टमेंट, भावे सुपारी के पास, शनिवार पेठ, सातारा.

कोल्हापुर **दिनांक :** 10 दिसम्बर **समय :** दोपहर 3-30 से 5 **संपर्क :** 9403787776
स्थल : दूसरी मंजिल, राधाकृष्ण मंदिर, 3rd लेन, सुभाष फोटो के सामने, शाहूपुरी, कोल्हापुर.

नासिक **दिनांक :** 15 दिसम्बर **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9021232111
स्थल : आर. पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टेंड के पास, नासिक.

दक्षिण भारत

मडगाँव **दिनांक : 7 दिसम्बर** **समय :** दोपहर 3 से 5-30 **संपर्क :** 8698745655
स्थल : गुजराती समाज एजुकेशनल ट्रस्ट होळ, मारुती मंदिर के नजदीक, दवरली, मडगांव, गोवा.

म्हापसा (गोवा) **दिनांक : 8 दिसम्बर** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 8698745655
स्थल : म्हापसा रेसीडेंसी (टूरिस्ट होटल), म्हापसा बस स्टेंड के पास, म्हापसा, गोवा.

हुबली **दिनांक : 12 दिसम्बर** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9513216111
स्थल : पाटीदार भवन, न्यू टिम्बर यार्ड, उन्कल, हुबली.

बेंगलुरु **दिनांक : 13 दिसम्बर** **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9590979099
स्थल : # 1246, 4th मैन E ब्लोक, श्री वाणी स्कूल, 2nd Stage, राजाजी नगर, बेंगलुरू.

बेंगलुरु **दिनांक : 14 दिसम्बर** **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9590979099
स्थल : महाराष्ट्र मंडल, 2nd मैन रोड, गाँधी नगर, बेंगलुरू.

बेंगलुरु **दिनांक : 15 दिसम्बर** **समय :** सुबह 9-30 से 11-30 **संपर्क :** 9845312986
स्थल : पाटीदार समाज, 8, हेसरघट्टा मैन रोड़, पीन्या, बेंगलुरू.

कोलकाता	दि : **15-17 नवम्बर**	**संपर्क :** 9830080820	पटना	दि : **15 दिसम्बर**	**संपर्क :** 9431015601
बेलगाम	दि : **9-10 दिसम्बर**	**संपर्क :** 9945894202	पूणे	दि : **7-8 दिसम्बर**	**संपर्क :** 9422660497
हुबली	दि : **11 दिसम्बर**	**संपर्क :** 9513216111	अमरावती	दि : **12-13 दिसम्बर**	**संपर्क :** 9403411471
जालंधर	दि : **8 दिसम्बर**	**संपर्क :** 9779233493	नासिक	दि : **14 दिसम्बर**	**संपर्क :** 9021232111

पालमपुर (हिमाचल) में पंजाब, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के महात्माओं के लिए आप्तपुत्र के साथ विशेष शिविर

तारीख - **29 व 30 नवम्बर - 1 दिसम्बर**

स्थल: होटल साईं गार्डन, स्टे फ्रेस्को के पास, लोहना हिल्स, P.O.-बुन्दला टी एस्टेट, पालमपुर.

शिविर का शुल्क रु. 2000 (ठहरने और भोजन का शुल्क)

रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क : जलंधर: 9779233493, चंडीगढ़ : 9780732237, धर्मशाला : 9805254559

रजिस्ट्रेशन शुरू हो गया है, रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख 20 नवम्बर है.

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 9 से 9-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ सुबह 7 से 8 तथा शनि से बुध रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम से शुक्र सुबह 7 से 7-30 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हररोज़ पर सुबह 9 से 9-30, दोपहर 2 से 2-30 रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8-30 से 9 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 9 GMT
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6 to 6-30am GMT)
- **'MA TV'** पर हर रोज, शाम 5-30 से 6-30 GMT - (गुजराती में)

Australia ➢ **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ➢ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE

USA-UK-Africa-Aus.➢ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अहमदाबाद

22-23 नवम्बर (शुक्र-शनि) रात 8 से 11 - **सत्संग और 24 नवम्बर** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

25 नवम्बर (सोम) शाम 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : म्यूनिसिपल ग्राउंड, पूजन बंगलो (राजहंस सिनेमा) के सामने, शुकन चार रस्ता, निकोल. **संपर्क :** 9327081075

विजापुर

26 व 28 नवम्बर शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग 27 नवम्बर** (बुध) शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : रामबाग राधा कृष्ण मंदिर, टी.बी. होस्पिटल रोड, विजापुर, जि. महेसाणा, (गुजरात). **संपर्क :** 9879227227

मोरबी

10 दिसम्बर (मंगल) शाम 8 से 11 - **सत्संग और 11 दिसम्बर** (बुध) शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**

12 दिसम्बर (गुरु) शाम 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : सरदार सोसायटी 1, सत्कार पार्टी प्लोट पीछे, कंडला-राजकोट बायपास, मोरबी. **संपर्क :** 9374284391

राजकोट

13-14 दिसम्बर (शुक्र-शनि) शाम 7 से 10 - **सत्संग और 15 दिसम्बर** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

16 दिसम्बर (सोम) शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : पारिजात पार्टी प्लोट, शीतल पार्क BRTS बस स्टोप, 150 फीट रींग रोड. **संपर्क :** 9499558183

अडालज त्रिमंदिर में सत्संग पारायण (शिविर)

2 दिसम्बर (सोम) - **पूज्य नीरुमा के जन्म के 75 वर्ष की पूर्णाहूति पर विशेष कार्यक्रम**

सुबह 7-30 से 9 **प्रार्थना आरती** तथा रात 8-30 से 10 - **पूज्यश्री सत्संग**

21-28 दिसम्बर - सुबह 10 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 7-30 - **आप्तवाणी-14 भाग-1 पर सत्संग सामायिक**

29 दिसम्बर - सुबह 10 से 1 - **श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

सूचना : 1) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. (079) 39830400, 9924348880 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 7) पर दि. 8 दिसम्बर 2019 तक अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। 3) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

कोलकाता

14 जनवरी (मंगल) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग और 15 जनवरी** (बुध) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : विद्या मंदिर स्कूल, मोइरा स्ट्रीट, मिंटो पार्क के पास, कोलकाता. **संपर्क :** 9830131411, 8777084640

रजिस्ट्रेशन शुरू हो गया है, रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख 31 दिसम्बर है.

सम्मेत शिखर

22 जनवरी (बुध) दोपहर - शाम 2-30 से 6 - **ज्ञानविधि**

स्थल : तमिलनाडु भवन के समाने, तलेटी, पोस्ट शिखरजी (मधुबन), जिल्ला: गिरिडीह. **संपर्क :** 9830131411

रजिस्ट्रेशन शुरू हो गया है, रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख 31 दिसम्बर है.

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 079-39830100, 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9328661188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

नवम्बर 2019
वर्ष-15 अंक-1
अखंड क्रमांक - 169

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

अंत में मोक्ष स्वरूपी तीर्थंकर के दर्शन से मुक्ति

सीमंधर स्वामी की मूर्ति के पासे बैठे रहोगे न, तब भी हेल्प होगी। उनके दर्शन करने पर ही मोक्ष होगा वर्ना मोक्ष नहीं हो सकता। उनके दर्शन करें, किनके दर्शन? मोक्ष स्वरूप के। देह सहित जिनका स्वरूप मोक्ष है। अब हमारी मुहर लगने के बाद सिर्फ तीर्थंकर के ही दर्शन करने बाकी रहेंगे! उनके दर्शन किए यानी कि मुक्ति! तीर्थंकर! वीतराग! अंतिम दशा वाले उनके दर्शन किए कि मुक्ति! बाकी का सब तो यहाँ ज्ञानी पुरुष ने तैयार करके दिया है। अब वे वर्क़ लगाएँगे! मिठाई कौन बनाता है और वर्क़ कौन लगाता है? ये सीमंधर स्वामी भगवान पूरे वर्ल्ड का कल्याण करेंगे। क्योंकि वे भगवान हाज़िर हैं।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.